बाल कथा सरोवर

सच्चे मित्र

4

यूनाइटेड पब्लिशिंग हाउस

बाल कथा सरोवर

भाग 4
(सच्चे मित्र)

लेखक
सन्तराम वत्स्य

प्रकाशक
यूनाइटेड पब्लिशिंग हाउस
सैक्टर III, शाप नं० 15
आर० के० पुरम, नई दिल्ली-110022

प्रकाशक :
यूनाइटेड पब्लिशिंग हाउस
नई दिल्ली-110022

© यूनाइटेड पब्लिशिंग हाउस

प्रथम संस्करण, 1974

मूल्य : 3.00 रु०

मुद्रक :
गजेन्द्र प्रिंटिंग प्रेस
के-32, नवीन शाहदरा
दिल्ली-110032

दो शब्द

'सच्चे मित्र' बाल कथा सरोवर की चौथी पुस्तक है। प्रस्तुत पुस्तक में हमने लोक कथाओं, परी कथाओं, नीती कथाओं, धार्मिक कथाओं और विश्व साहित्य की अमर कथाओं—सभी को स्थान दिया है। बाल-मन के विकास क्रम से इसमें मनोरंजन के साथ-साथ शिक्षापूर्ण कहानियाँ सम्मिलित की गई हैं।

भाषा सरल तथा प्रवाहपूर्ण है। बालक इस पुस्तक को अध्यापक की सहायता के बिना भी पढ़ सकेंगे। फिर भी आध्याक का मार्ग-दर्शन तो अपेक्षित है ही।

अन्त में अभ्यासार्थ कुछ प्रश्न दे दिए हैं। ये पाठों को हृदयंगम कराने में सहायक होंगे, ऐसा विश्वास है।

—लेखक

विषय-सूची

पाठ	विषय			पृष्ठ
1.	आओ मित्र बनाएं	...	...	5
2.	न्यायामूर्ति सेठ	...	...	20
3.	तोताराम की चालाकी	...	...	25
4.	शेखचिल्ली	...	...	30
5.	फिर चुहिया की चुहिया	...	...	34
6.	चतुर तोता	...	...	39
7.	लालच बुरी बला	...	...	44
8.	जैसा कहो, वैसा करो	...	...	50
9.	सच्चे मित्र	...	...	56
10.	जादुई कूची	...	...	62
11.	दया धर्म	...	...	69
12.	बहकावे में मत आओ	...	...	76
13.	गड़बड़झाला	...	...	82
14.	जैसे को तैसा	...	...	89

आओ मित्र बनाएं

गोदावरी नदी के किनारे एक सेमल का पेड़ था। इस पेड़ पर रात को तरह-तरह के पंछी बसेरा लेते थे। सबेरे ही ये सारे पंछी इधर-उधर उड़ जाते। रात को फिर लौट आते।

एक दिन बड़े सबेरे जब एक काना कौवा जागा और उड़ने को तैयार हुआ तो क्या देखता है कि सेमल के नीचे एक शिकारी पंछियों को पकड़ने का जाल लिये चला जा रहा था। इस शिकारी की शकल बड़ी डरावनी थी। कपड़े भी मैले-कुचैले थे। कौवे ने मन में सोचा, 'आज सबेरे-सबेरे इस दुष्ट की शकल देखी है। पता नहीं आज का दिन कैसा बीतेगा!' यह सोचकर कौवा शिकारी के पीछे-पीछे उड़ चला।

कुछ दूर जाकर शिकारी ने अपने थैले से मुट्ठी भर चावल निकालकर बिखेर दिये और अपना जाल फैला दिया। जाल फैलाकर वह पास की झाड़ी में छिपकर बैठ गया।

इतने में चितला नामक कबूतरों का राजा सैंकड़ों कबूतरों के साथ उड़ता हुआ आया। उसने बिखरे हुए चावलों को देखा। कबूतरों का वह झुण्ड चावलों के दाने चुगने के लिए बैठने लगा। तब कबूतरों का राजा बोला, "यहां जंगल में चावल कहां से आए? मुझे तो लगता है, कुछ गड़बड़ है। यह हमें फंसाने की चाल है।"

एक जवान कबूतर बोला, "यदि इसी तरह सोचने लगे तो भूखों मरना पड़ेगा। ऐसी कौन-सी जगह है, जहां खतरा नहीं। हमें तो भूख लग रही है।"

सारे कबूतर नीचे उतर पड़े और चावलों को चुगने लगे तो जाल में फंस गए। अब तो सभी उस जवान कबूतर को बुरा-भला कहने लगे जिसने कहा था कि चलो चावल चुग लें।

चितला बोला, "अब किसी को भला-बुरा कहने से क्या लाभ! अब तो यह सोचो कि जान कैसे बच सकती है? मेरी मानो तो सभी एक साथ ज़ोर लगाकर उड़ो और जाल को भी उड़ाकर ले चलो।

सबने कहा, "ठीक है।" सबने जोर लगाकर एक साथ उड़ान भरी और जाल समेत उड़ चले।

शिकारी ने कबूतरों को जाल समेत उड़ते देखा तो दंग रह गया। उसने सोचा, 'मैं इनका पीछा करूंगा। जहां कहीं भी ये जाकर बैठेंगे, वहीं पकड़ लूंगा।' यह सोचकर वह दौड़ने लगा। वह ऊपर की ओर देखता जाता और दौड़ता जाता।

जब कबूतर जाल समेत दूर निकल गए और शिकारी को दीखने बन्द हो गए तो उसने दौड़ना बन्द

कर दिया।

कबूतर भी शिकारी पर नज़र रखे हुए थे। जब उन्होंने देखा कि शिकारी बहुत पीछे रह गया है और रुक गया है तो बड़े प्रसन्न हुए। उन्होंने अपने राजा से पूछा, "अब क्या करना चाहिए ?"

चितला बोला, "उधर जंगल में मेरा मित्र एक चूहा रहता है। थोड़ा और ज़ोर लगाओ और उसके बिल तक चलो। वह इस जाल को काटकर हमें बचा लेगा।" वे चूहे के बिल पर जा पहुंचे।

बहुत से कबूतरों के वहां बैठने से 'फड़फड़' की आवाज हुई तो चूहा डर गया। पर जब चितले कबूतर ने उसे पुकारा तो उसकी आवाज़ पहचान कर बाहर निकल आया। दोनों मित्र बड़े प्रेम से मिले। चूहे ने पूछा, "मित्र ! चिन्ता मत करो, मैं अभी तुम्हारे जाल को काटता हूं।"

चितला बोला, "पहले इन सब को छुड़ाओ। बाद में मुझे छुड़ाना।"

चूहे ने वैसा ही किया। सभी कबूतर जाल कटने से छूट गए।

काना कौआ यह सब देख रहा था। उसने चूहे

की बड़ी प्रशंसा की। फिर बोला, "चूहे भाई! मैं भी तुम्हारे साथ मित्रता करना चाहता हूं।"

चूहा बिल के भीतर से बोला, "तुम कौन हो भाई?"

"मैं हूं काना कौआ!"

चूहा बोला, "वाह भई वाह! तेरे साथ मित्रता! तेरी-मेरी मित्रता कैसे हो सकती है? तू तो मुझे खा जाएगा।"

कौआ बोला, "भाई विश्वास करो, मेरा रंग जरूर काला है पर भीतर से काला नहीं हूं। आप अगर मुझे अपना मित्र नहीं बनाएंगे तो मैं भूखा-प्यासा रहकर यहीं जान दे दूंगा।"

चूहा बोला, "मेरी-तुम्हारी मित्रता हो नहीं सकती। मित्रता अपने जैसों से होती है। हिरन और सियार भी मित्र बने थे। पर परिणाम क्या निकले जानते हो?"

काना कौआ बोला, "तुम्हीं सुनाओ क्या हुआ था?"

चूहा बोला, "एक जंगल में हिरन और कौआ रहते थे। दोनों में बड़ी मित्रता थी। एक दिन उस

मोटे हिरन को एक सियार ने देखा तो उसके मुंह में पानी भर आया । वह सोचने लगा, 'कोई ऐसा उपाय करता हूं जिससे इस हिरन का मांस खाने को मिले ।' यह सोचकर उसने हिरन से मित्रता कर ली ।

" सांझ को वह सियार हिरन के साथ-साथ उसके घर गया । हिरन के पुराने मित्र कौए ने हिरन से पूछा, 'यह नया साथी कौन है ।'

" हिरन ने कहा, 'यह एक सियार है । हमसे मित्रता करना चाहता है ।'

" कौए ने कहा, 'जिसका कुछ अता-पता न हो, उसके साथ मित्रता नहीं करनी चाहिए ।'

" सियार बोला, 'अता-पता तो साथ रहने पर ही लगता है । जब आप दोनों की मित्रता हुई थी तब आप भी एक-दूसरे को कहां जानते थे ? और अब देखिए, आप दोनों कितने गहरे मित्र बन गए हैं । यह हिरन मेरा मित्र बन गया है । आप हिरन के पुराने मित्र हैं । तो आप भी मेरे मित्र हुए । मित्र का मित्र भी मित्र होता है ।'

" हिरन बोला, 'अरे भई झगड़ते क्यों हो ? हम तीनों यहां मिल-जुलकर रहेंगे ।'

" कौए ने कहा, 'तुम्हारी मर्जी ।'

" एक दिन सियार ने हिरन से कहा, 'यहां पास ही एक बहुत बढ़िया खेत है। मैं तुम्हें वहाँ ले चलूंगा। उसे चरकर तुम और भी तगड़े हो जाओगे।'

" सियार ने वह खेत हिरन को दिखा दिया। हिरन प्रतिदिन वहाँ जाता और पेट भरकर चरता।

" खेत के मालिक ने जब देखा कि सारा खेत उजड़ रहा है तो उसने वहाँ जाल लगा दिया।

" जब हिरन फिर चरने आया तो जाल में फंस गया।

" सियार ने हिरन को फंसा हुआ देखा तो खूब प्रसन्न हुआ। उसने मन में सोचा, मैं यही तो चाहता था। शिकारी अब इसे मार डालेगा। तब मुझे भी इसका मांस खाने को मिलेगा।

" हिरन ने सियार को देखा तो बोला, 'मित्र, अपने तीखे दांतों से इस जाल को काट डालो। नहीं तो मारा जाऊँगा।'

" सियार ने जाल को अच्छी तरह देखा, फिर बोला, 'मित्र हिरन ! यह जाल चमड़े का बना हुआ है। आज मेरा व्रत है। इसलिए चमड़े को मुंह नहीं

लगाऊंगा। हाँ, कल सवेरे इसे काट सकता हूं। तुम आज की रात किसी तरह काट लो।' यह कहकर वह पास की झाड़ियों में जा छिपा।

"साँझ को जब हिरन अपने घर नहीं लौटा तो कौए को चिन्ता हुई। वह उसे खोजने निकला तो देखा कि हिरन जाल में फंसा हुआ है। कौए ने पूछा, 'मित्र ! यहाँ कैसे आ फंसे ?'

"हिरन बोला, 'मित्र ! मैंने तुम्हारी बात नहीं मानी थी। उसी का यह फल है।'

"कौए ने पूछा, 'वह धोखेबाज सियार कहाँ है ?'

"हिरन बोला, 'यहीं कहीं छिपा होगा।'

"अब कौआ क्या करे ? सारी रात सोचते-सोचते बीत गई। सवेरे ही खेत का मालिक हाथ में मोटी लाठी लिए आता दिखाई दिया। कौए ने हिरन से कहा, 'मित्र ! वह लाठी लिए आ रहा है ! तुम साँस रोककर इस तरह लेट जाओ जैसे मर गए

हो। जब मैं 'काँव-काँव' करूंगा तब उठकर भाग जाना।'

" हिरन ने वैसा ही किया। इतने में खेत का मालिक भी आ पहुंचा। हिरन को फंसा देखकर वह बहुत प्रसन्न हुआ। 'अरे ! यह तो अपने आप मर गया है।' यह कहते हुए उसने जाल समेट लिया।

" उधर डाल पर बैठे कौए ने 'काँव-काँव' कर दी।

" हिरन सिर पर पाँव रखकर भागा। खेत के मालिक ने भागते हिरन को फेंक कर लाठी मारी। हिरन तो दूर निकल गया था। लाठी लगी झाड़ी में छिपे सियार को। लाठो की चोट से सियार वहीं ढेर हो गया।"

काना कौआ बोला, "तुम्हारी इस कहानी से तो यही पता लगता है कि कौआ मित्र की जान बचाता है। मैं तो तुम्हारे गुणों पर लट्टू हूं। तुमने अपने मित्र कबूतर और उसके साथियों की जान बचाई। अब या तो मुझे भी अपना मित्र मानो, नहीं तो मैं भूखा-प्यासा रहकर यहीं अपनी जान दे डालूंगा।"

अन्त में चूहे ने उस काने कौए को भी अपना मित्र बना लिया।

अभ्यास

1. एक दिन सबेरे काने कौए ने क्या देखा ?
2. शिकारी ने क्या किया ?
3. कबूतर जाल में कैसे फंसे ?
4. फिर कबूतरों ने क्या किया ?
5. चूहे ने मित्र को कैसे बचाया ?
6. कौए ने चूहे से क्या कहा ?
7. चूहे ने कौए को क्या कहानी सुनाई ?
8. इस कहानी से क्या सीख मिलती है ?

दूसरों के लिए

जापान के एक पहाड़ी गांव में, एक झोंपड़ी में हागामुची का परिवार रहता था। पहाड़ी की तलहटी में एक छोटा-सा कसबा था और कसबे से कुछ दूर समुद्र का किनारा।

आज कसबे में कोई मेला था। इसलिए आस-पास के सभी गांवों के लोग भी वहां जमा थे। बूढ़ा हागा-मुची और उसका एक बीमार पोता चुंगचांग घर पर ही रह गए थे। हागामुची अपने आंगन में बैठे चुंग-चांग को मेले की बातें बता रहा था। मेले की भीड़-भाड़ और हो-हल्ला उन्हें साफ दिखाई और सुनाई दे रहा था। रंग-बिरंगे कपड़े पहने लोग मेले में घूम रहे थे।

चुंगचांग बीमारी के कारण मेले में नहीं जा सका था, पर उसका मन अब भी मेले में ही था। हागामुची क्षणभर के लिए चुप होता तो चुंगचांग फिर मेले की बात छेड़ देता। वह कभी हिंडोले पर

झूलते लोगों के बारे में और कभी खिलौनों और मिठाइयों के बारे में बातें करने लगता । हागामुची बच्चे का मन बहलाने के लिये उससे इधर-उधर की बातें करता रहा।

थोड़ी देर बाद वह दादा का कन्धा हिलाते हुए बोला,"दादा, वह देखो सामने समुद्र में एक जहाज़ आ रहा है। दादा ! मैं बड़ा होकर जहाज़ पर बैठूंगा और खूब सैर करूंगा।"

हागामुची ने पोते की 'हां' में 'हां' मिलाई और समुद्र की ओर देखने लगा। आज सबेरे से ही समुद्र में हल्का-सा तूफान आया हुआ था, पर वह शान्त हो चुका था। हागामुची ने देखा कि समुद्र का पानी बहुत पीछे हट गया है और किनारे पर रेत ही रेत निकल आई है । उसने इससे पहले समुद्र को कभी भी इतना पीछे हटा हुआ नहीं देखा था। वह जानता था कि यह बड़ा भयंकर तूफान आने की निशानी थी। वह ध्यान से समुद्र को देखता रहा। कुछ देर बाद उसे तूफान की भयंकर लहर किनारे की ओर आती दिखाई दी।

वह चिल्ला-चिल्लाकर कसबे के मेले में जमा लोगों को पुकारने लगा किन्तु मेले के हो-हल्ले में

उसकी आवाज कौन सुनता ! वह कसबे तक जाकर लोगों को बताता तो बहुत देर हो जाती क्योंकि वह बूढ़ा होने से भाग तो सकता नहीं था। बेचारा बूढ़ा समझ नहीं पा रहा था कि वह लोगों को तूफान के आने की सूचना कैसे दे !

सोचते-विचारते उसे एक उपाय सूझ गया। उसने तुरन्त घास-फूस के अपने झोंपड़े में आग लगा दी। झोंपड़े में आग लगते ही कसबे के मन्दिर का घंटा जोर-

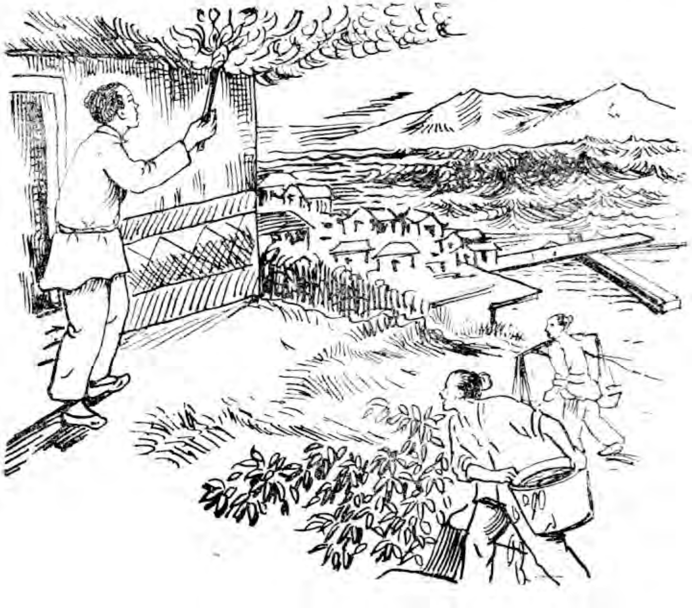

जोर से बज उठा। इस घंटे का अर्थ था कि कहीं आग लग गई है। मन्दिर से किसी ने आग लगी देख ली थी और सबको उसकी सूचना देने के लिए घंटा बजा दिया था जिससे लोग आग बुझाने के लिए दौड़ पड़ें।

घंटा बजता सुनकर लोगों ने चारों ओर दृष्टि दौड़ाई तो पहाड़ी पर झोंपड़ा जलता दिखाई दिया। बहुत से लोग आग बुझाने के लिए दौड़ पड़े।

कुछ देर बाद ही समुद्र की तूफानी लहरें गर्जती हुई आईं और सारा कसबा बह गया। जो लोग झोंपड़ी को जलता देखकर भी बुझाने नहीं दौड़े थे, वे तूफान में बह गए।

परोपकारी हागामुची ने अपना घर जलाकर सैंकड़ों जानें बचाईं। इस उपकार के बदले लोगों ने भी हागामुची का एक स्मारक बनवा दिया। आज भी जापान के लोग बड़ी श्रद्धा से इस कहानी को सुनाते हैं।

अभ्यास

1. यह कहानी किस देश की है?
2. चुंगचांग मेला देखने क्यों नहीं गया था?

3. हागामुची ने किस बात से अनुमान लगाया कि भयंकर तूफान आने वाला है ?
4. मेले के लोगों को तूफान आने की सूचना कैसे मिली ?
5. तूफान में किन लोगों की जानें गईं ?
6. जो आग बुझाने के लिए दौड़ पड़े, वे तूफान से कैसे बचे ?

न्यायमूर्ति सेठ

दिल्ली में एक बड़ा सेठ रहता था। उसके घर में कई नौकर-चाकर थे। एक बार सेठ की चोरी हो गई।

सेठ को पूरा विश्वास था कि चोरी किसी नौकर ने ही की है। चोर बाहर से नहीं आया है। सेठ ने बारी-बारी सभी नौकरों से पूछा कि जिसने भी चोरी की है, वह मोहरों की थैली को चुपचाप उसी जगह रख दे तो मैं किसी को कुछ नहीं कहूंगा और पुलिस में शिकायत भी नहीं करूंगा। पर सभी नौकरों ने यही कहा कि हमने चोरी नहीं की है।

सेठ को पूरा भरोसा था कि चोर इन्हीं में ही कोई एक है। सेठ ने कहा, "यहीं बता दो, नहीं तो पुलिस वाले डंडे मार-मार कर तुम्हारा कचूमर निकाल देंगे।" पर फिर भी कोई नहीं बोला।

अन्त में सेठ ने पुलिस में रपट लिखा दी कि मेरी चोरी हो गई है। उसने यह भी बता दिया कि चोर

कोई नौकर ही है।

फिर सेठ ने थानेदार से कहा, "थानेदार साहब ! यह तो ठीक है कि चोरी किसी नौकर ने ही की है। पर मैं नहीं चाहता कि चोरी उगलवाने के लिए सबको पीटा जाए। इस तरह तो जो बेकसूर होंगे, वे भी पिटेंगे। ये सात नौकर हैं। इनमें कोई एक ही चोर है। उस एक को पकड़ने के लिए बाकी छः को पीटना उचित नहीं है। इसलिए कोई ऐसा उपाय कीजिए कि किसी बेकसूर को सजा न मिले।"

थानेदार ने कहा, "सेठ जी, आप सातों नौकरों को यहां थाने में ले आइए। हम किसी भी बेकसूर को सजा नहीं देंगे और चोर को पकड़ लेंगे।"

सेठ जी सातों नौकरों को लेकर थाने में पहुंचे। थानेदर ने अपने थैले से सात लकड़ी के टुकड़े निकाले। सातों टुकड़े एक जैसे और नाप में बराबर थे। थानेदार ने बताया कि ये लकड़ी के टुकड़े हमें एक साधु ने दिए हैं। इनसे हम कई चोरों को पकड़ चुके हैं। इन लकड़ी के टुकड़ों में बड़ी खूबी है। हम ये लकड़ी के टुकड़े उन आदमियों को दे देते हैं जिन पर हमें चोर होने का सन्देह होता है। एक रात भर ये टुकड़े उन लोगों के पास रहते हैं। सबेरे हम इन्हें

वापस ले लेते हैं । इनकी खूबी यह है कि जो आदमी चोर होगा, उसका लकड़ी का टुकड़ा थोड़ा-सा बढ़ जाएगा ।"

यह कहकर थानेदार ने सातों नौकरों को एक-एक टुकड़ा दे दिया और वापस भेज दिया ।

सेठ जी ने हर एक नौकर को अलग-अलग कोठरी में बन्द कर दिया ।

जिस नौकर ने चोरी की थी, वह मन में सोचने लगा, यह थानेदार तो एकदम मूर्ख है । इसने तो सारा भेद पहले ही खोल दिया । मैं देखूंगा कि मेरी लकड़ी कैसे बढ़ती है !

छः नौकर जिन्होंने चोरी नहीं की थी, चुपचाप सो गए। परन्तु जिसने चोरी की थी, उसे नींद कैसे आती ! उसे अपनी लकड़ी के बढ़ जाने का डर जो था। वह बार-बार अपनी लकड़ी को नापता रहा। उसे लगा कि लकड़ी सचमुच थोड़ी-सी बढ़ गई है। उसने चाकू से थोड़ी-सी लकड़ी छील दी।

सबेरे ही थानेदार सेठ के पास आ पहुंचा। बारी-बारी एक-एक कोठड़ी का दरवाजा खोला गया और लकड़ी नापी गई। छः नौकरों की लकड़ी जैसी की तैसी थी। पर जब सातवें की लकड़ी नापी गई तो वह कुछ छोटी हो गई थी।

थानेदार ने सेठ जी से कहा, "सेठ जी, चोर पकड़ा गया। इसी नौकर ने आप की थैली चुराई है।"

नौकर थानेदार की चाल को नहीं समझ सका था। वह तो अपने को चतुर और थानेदार को मूर्ख समझता था।

थानेदार ने उस नौकर को हथकड़ी लगा दी। जब सिपाही उसे पकड़ कर थाने ले चले तो उसने रास्ते में चोरी मान ली और यह भी बता दिया कि उसने थैली कहां छिपाई है।

अभ्यास

1. चोरी होने पर सेठ ने नौकरों से क्या कहा ?
2. थानेदार से सेठ ने क्या कहा ?
3. थानेदार ने चोर को पहचानने के लिए क्या उपाय किया ?
4. चोर नौकर ने मन में क्या सोचा ?
5. चोर नौकर को नींद क्यों नहीं आई ?
6. चोर नौकर कैसे पकड़ा गया ?

तोताराम की चालाकी

एक ठग था। उसका नाम था तोताराम। तोताराम ठगी के नए-नए तरीके निकालता था।

एक दिन दोपहर के समय वह एक गांव में घूम रहा था। पास ही खेत में एक किसान हल जोत रहा था। उसके दोनों बैल बूढ़े और कमज़ोर थे। ऊपर से तेज़ धूप पड़ रही थी। शायद भूखे-प्यासे भी थे। उनसे हल खींचा नहीं जा रहा था। किसान उन्हें पीट रहा था पर वे फिर भी हल को ठीक तरह से खींच नहीं पा रहे थे।

किसान दुःखी होकर कह रहा था, "तुम मर जाते तो मैं नए खरीद लाता। पर न मरते हो, न काम करते हो। तुम्हें बाघ भी नहीं खाता।"

तोताराम ने पूछा, "क्या बात है भाई! क्यों बिगड़ रहे हो?"

"अरे भई क्या बताऊं! मैं तो इन बूढ़े बैलों से तंग आ चुका हूं। पर ये मरते भी नहीं। मर जाते

तो मैं बैलों की नई जोड़ी खरीद लाता। मैंने पूरे सौ रुपये जमा करके रखे हुए हैं।"

तोताराम ने सलाह दी, "तुम इन बैलों की पीठ पर कीचड़ का लेप कर दो। फिर देखना कैसे तेज़ चलते हैं।"

किसान ने वैसा ही किया। कीचड़ की ठंड से बैलों को बड़ा आराम मिला। वे पहले से कुछ जल्दी चलने लगे।

अब तोताराम बोला, "किसान भैया! मुझे बड़ी प्यास लगी है। एक लोटा पानी तो पिलाओ।"

खेत के पास ही गन्दे पानी का तालाब था। किसान वहां से पानी भर लाया और तोताराम को पिलाने लगा। गन्दे पानी को देखकर तोताराम बोला, "अरे भाई! यह गंदला पानी तो मुझसे नहीं पिया जाएगा!"

किसान बोला, "मेरा घर पास ही है। वहां तुम्हें घड़े का ठंडा पानी पीने को मिलेगा। वहीं जाकर पी लो।"

तोताराम बोला, "तुम्हारी घरवाली मना तो नहीं करेगी न?"

किसान बोला, "अरे ! पानी पिलाने को कौन मना करता है !"

तोताराम किसान के घर जाकर उसकी पत्नी से बोला, "भाभी ! भाई साहब ने अभी बैलों की नई जोड़ी खरीदी है। उन्होंने जो सौ रुपये तुम्हारे पास रखे हैं, उन्हें मांग लाने के लिए मुझे भेजा है।"

घर की मालकिन बड़ी समझदार थी। वह एक अनजान आदमी को रुपये देना नहीं चाहती थी। पर तोताराम तो पूरा ठग था। वह उसके मन की बात

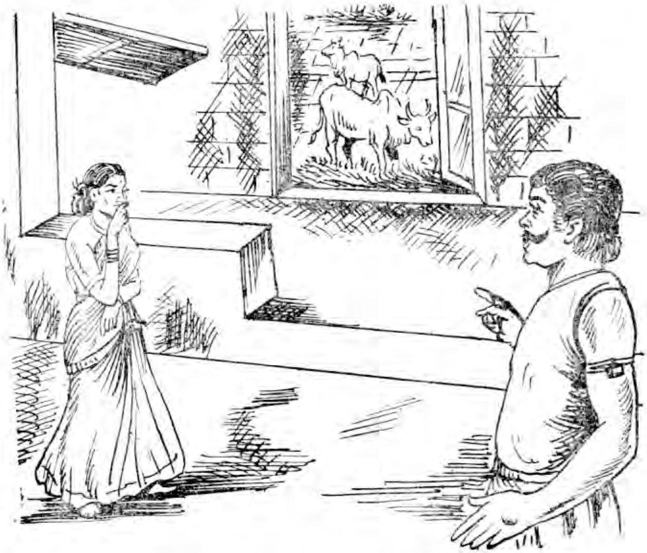

समझ गया। उसने खेत की ओर उंगली करके कहा, "वह देखो, नये बैलों की जोड़ी हल में जुती हुई है।"

कीचड़ के लेप से बैलों का रंग बदल गया था। किसान की पत्नी ने देखा कि बैल तो सचमुच नए हैं। वह फिर सोच में पड़ गई कि रुपये दूँ या नहीं ! अन्त में उसने अनजान आदमी के हाथ रुपये देने से इनकार कर दिया।

तोताराम तो माना हुआ ठग था। उसने एक नई चाल चली। वह खेत की ओर मुंह करके ज़ोर से चिल्ला कर बोला, "भाभी नहीं देती…?"

किसान ने सुन लिया। उसने वहीं से घरवाली को झिड़कते हुए कहा, "अरी देती क्यों नहीं ?" अब तो किसान की घरवाली को पूरा विश्वास हो गया। उसने सौ में से पांच रुपये का नोट निकाल लिया और पचानवे रुपये तोताराम को दे दिऐ। तोताराम रुपये लेकर चम्पत हुआ।

साँझ को किसान खेत जोतकर घर लौटा। वह जब भोजन करने बैठा तो उसकी पत्नी बोली, "मैं भी चालाक निकली। मैंने सौ के बदले पचानवे ही दिये।"

किसान बोला, "मेरी समझ में तुम्हारी बात नहीं आई। क्या कह रही हो ?"

वह बोली, "वह आया था न रुपये लेने जिससे तुमने बैलों की जोड़ी खरीदी है। मैंने सौ न देकर उसे पचानवे ही दिये।"

किसान ने चौंककर पूछा, "मैंने न तो बैलों की जोड़ी खरीदी और न किसी को रुपये लेने भेजा।"

पत्नी से सारी बात सुनकर किसान ने भोजन करना छोड़ दिया और हाथ में लम्बी लाठी लेकर उस ठग को खोजने निकल पड़ा।

अभ्यास

1. किसान बैलों को क्यों पीट रहा था और क्या कह रहा था ?
2. तोताराम ने बैलों के ऊपर कीचड़ लगाने की सलाह क्यों दी ?
3. तोताराम ने पीने के लिए पानी क्यों मांगा था ? क्या उसे प्यास लगी थी ?
4. तोताराम ने क्या चालाकी की ?
5. सांझ को किसान की पत्नी ने किसान से क्या कहा ?

शेखचिल्ली

काशी नगरी में एक निर्धन ब्राह्मण रहता था। वह पढ़ा-लिखा तो था नहीं, इसलिए भीख मांगकर गुजारा करता था। वह अकेला ही था। उसका विवाह अभी हुआ नहीं था और माता-पिता मर चुके थे। उसे भीख में जो अनाज मिलता, खाने के बाद उसमें से कुछ बच जाता था। बचे हुए अनाज को वह घड़े में इकट्ठा करता जाता था। इस तरह वह घड़ा अनाज से भर गया।

एक रात वह चटाई पर लेटा हुआ था। अनाज से भरा घड़ा उसके पैरों के पास एक कोने में रखा हुआ था। वह अनाज से भरे घड़े को देखकर बहुत प्रसन्न हो रहा था। उसे नींद नहीं आ रही थी। सोए-सोए वह सोचने लगा, "यदि वर्षा न बरसे और अकाल पड़ जाए तो अनाज बहुत महंगा हो जाएगा। तब मैं इस अनाज को बेच डालूंगा। इसको बेचने से मुझे कम से कम सौ रुपए तो मिल ही जाएंगे। उन रुपयों से मैं

दो बकरियां खरीदूंगा।

बकरियों से छः महीने में कई मेमने हो जाएंगे। फिर तो मैं बकरियों के पूरे झुंड का मालिक बन जाऊंगा।

फिर मैं उन बकरियों को बेचकर गाय खरीद लूंगा। गायों के ज्यादा हो जाने पर उन्हें भी बेच डालूंगा। फिर घड़ों दूध देने वाली भैंसें खरीद लूंगा। मैं खूब दूध, दही और घी खाकर तगड़ा हो जाऊंगा। जो दूध बचेगा उसे बेचकर रुपए इकट्ठे करूंगा। फिर उन भैंसों को भी बेचकर घोड़ियां खरीदूंगा। उनके बछेरे होंगे। वे बड़े होकर घोड़े बनेंगे। उन घोड़ों को भी बेच डालूंगा। उनकी अच्छी कीमत मिलने से मेरे पास ढेरों रुपए जमा हो जाएंगे। उन रुपयों से मैं एक बंगला बनवाऊंगा।

जब बंगला बन जाएगा तो सभी मेरा आदर-सम्मान करने लगेंगे। फिर तो कोई भला ब्राह्मण अपनी बेटी मुझे ब्याह देगा।

फिर हमारे घर में एक बेटा पैदा होगा। मैं उस का नाम सोम शर्मा रखूंगा।

जब वह घिसटने लगेगा तो मैं पुस्तक हाथ में ले

कर घुड़साल की छत पर बैठा-बैठा उसे देखा करूंगा। तब सोम शर्मा की माता उसे उंगली के इशारे से मुझे दिखाएगी। वह कहेगी, 'देख, तेरे पिता जी वह बैठे हैं।'

मुझ पर नजर पड़ते ही वह मां की गोदी से उतर कर मेरी ओर घिसटेगा। जब वह बंधे हुए घोड़ों के पीछे से घिसटता आएगा तो मैं गुस्से के साथ चिल्ला कर उसकी मां से कहूंगा, 'मुन्ने को उठा, कहीं घोड़ा लात न मार दे।'

वह घर के काम में लगी होने के कारण मेरी बात को नहीं सुन पाएगी। तब मैं उठकर उसे जोर

से लात मारूंगा।

इस तरह मन में सोचते हुए उस ब्राह्मण ने जोर की लात मारी जिससे वह घड़ा टूट गया और अनाज बिखर गया।

अभ्यास

1. शेखचिल्ली लेटे-लेटे क्या सोचने लगा ?
2. घड़ा कैसे टूटा ?
3. 'शेखचिल्ली' किसे कहते हैं ?
4. इस कहानी को अपने शब्दों में लिखो ?

फिर चुहिया की चुहिया

गंगा के किनारे तपोवन में ऋषियों के कई आश्रम हैं। वहीं पर एक बड़े महात्मा रहते थे। वह एक दिन गंगा के जल में हाथ जोड़े खड़े थे कि उनके जुड़े हाथों पर एक चुहिया गिर पड़ी। बात यह थी कि कोई पक्षी इस चुहिया को चोंच में पकड़ कर उड़ा जा रहा था। उसकी चोंच से किसी तरह छूट कर यह महात्मा जी के हाथों में गिर पड़ी।

वे दयालु महात्मा उस चुहिया को अपने आश्रम में ले आए और पालने लगे।

वहीं एक बिल्ली भी थी। वह बार-बार चुहिया को खाने के लिए झपटती। महात्मा ने सोचा, 'यह बिल्ली किसी दिन इस चुहिया को जरूर खा जाएगी। उन्होंने अपने तप के प्रभाव से चुहिया को बिल्ली बना दिया।

अब वह बिल्ली बनकर इधर-उधर घूमने लगी। एक दिन इस बिल्ली पर एक कुत्ता झपटा। तब

बड़ी कठिनाई से आम के पेड़ पर चढ़कर बिल्ली ने अपनी जान बचाई।

महात्मा जी कुत्ते को लपकता देख रहे थे। उन्होंने दया करके इस बिल्ली को कुत्ता बना दिया। उन्होंने सोचा, 'अब इसे कुत्ते से डरने की आवश्यकता नहीं रही।'

पर एक रात को एक बाघ ने कुत्ते पर हमला बोल दिया। आस-पास के लोगों ने जाग कर हो-हल्ला मचाया तो बाघ भाग गया और कुत्ते की जान बची।

महात्मा सोचने लगे, 'यह बाघ किसी दिन इस कुत्ते को जरूर मार डालेगा।' इसलिए उन्होंने कुत्ते को बाघ बना दिया।

अब यह बाघ यहीं आश्रम में रहने लगा। महात्मा जी के पास कई लोग आते। वे इस बाघ को देखते तो बड़े हैरान होते। वह किसी को कुछ नहीं कहता था।

एक दिन कोई सज्जन महात्मा जी से मिलने आए। उन्होंने बाघ को चुपचाप एक ओर बैठे देखा। उनको बड़ा आश्चर्य हुआ।

उन्होंने महात्मा जी से पूछा, "महाराज ! यह

बाघ आपने किसलिए पाल रखा है ?"

महात्मा बोले, "भाई ! बाघ-वाघ मैं क्यों पालता। जिसे आप बाघ समझ रहे हैं, वह मेरे लिए तो एक चुहिया ही है। फिर उन्होंने बताया कि किस तरह मुझे चुहिया मिली । फिर चुहिया को बिल्ली बनाने, बिल्ली से कुत्ता और कुत्ते से बाघ बनाने की सारी कहानी उन्होंने कह सुनाई ।

इस तरह आश्रम में कई लोग आते और जब बाघ को देखकर पूछते तो महात्मा जी वही कहानी

सुना देते ।

बाघ एक ओर बैठा सारी बातें सुनता रहता। अब सब लोग जान गए कि चुहिया से ही यह बाघ बना है। इसलिए उससे कोई डरता भी नहीं ।

बाघ ने सोचा, 'मैं बाघ हूं, फिर भी लोग मुझे चुहिया से ज्यादा कुछ नहीं समझते।'

वह इस बात को जानता ही था कि महात्मा जी सबको मेरे चुहिया होने की बात बता देते हैं। इस-लिए उसने निश्चय किया कि यदि इस महात्मा को मार डालूं तो लोग मेरे चुहिया होने की बात नहीं जान सकेंगे ।

महात्मा जी बड़े ज्ञानी थे । उन्हें पता लग गया कि बाघ के मन में क्या बात आई है। उन्होंने उसे फिर चुहिया बना दिया।

अभ्यास

1. चुहिया महात्मा जी को कैसे मिली ?
2. बिल्ली के चुहिया पर झपटने से महात्मा ने मन में क्या सोचा ?
3. मिलने आए सज्जन ने बाघ को देखकर क्या

कहा ?

4. महात्मा ने यह क्यों कहा कि मेरे लिए यह बाघ एक चुहिया ही है ?
5. लोग बाघ से डरते क्यों नहीं थे ?
6. बाघ ने मन में क्या सोचा ?
7. महात्मा जी ने उसे फिर चुहिया क्यों बना दिया ?

चतुर तोता

एक था तोता। उसका नाम था गंगाराम। गंगाराम अपनी तीखी चोंच से फलों को कुतर कर खराब करता था। वह खाता कम, खराब ज्यादा करता। वह फल पर चोंच मारता तब उसे पता लगता कि फल खाने योग्य है कि नहीं। पर जिस फल पर चोंच लग जाती, वह खराब तो हो ही जाता।

गंगाराम फलों के एक बाग में, एक पेड़ के खोखले भाग में रहता था। बाग का माली गंगाराम के कारण बहुत परेशान था। उसके बाग के बहुत-से फलों को गंगाराम खराब कर देता था।

माली ने गंगाराम को पकड़ने के लिए जाल फैलाया। गंगाराम जाल में फंस गया। माली अपने इस शत्रु को फंसा देखकर बहुत प्रसन्न हुआ। उसने गंगाराम की गर्दन मरोड़ने का निश्चय किया।

गंगाराम ने सोचा, 'यह माली अब मुझे जीवित नहीं छोड़ेगा। पर घबराने से तो कुछ होता नहीं है।

हिम्मत से काम लेकर बचने का उपाय करना चाहिए। उसने धीरे-से कहा, "ऐ माली, मैंने जो तुम्हारे बाग के फल खाए और खराब किए हैं, उसके लिए तुम मुझे जो चाहो, वह दण्ड दे सकते हो। तुम चाहो तो मुझे मार भी सकते हो। पर मरने से पहले मैं तुम्हें कुछ ऐसी गुप्त बातें बताना चाहता हूं, जिनको जान लेने से, मैंने तुम्हारी जितनी हानि की है, तुम्हें उससे भी अधिक लाभ होगा। मेरी उन बातों को ध्यान से सुन लो, फिर तुम्हारे मन में जो आए वह करना।"

माली बोला, "तुझे जो कुछ कहना है, उसे जल्दी-जल्दी कह डाल। मैं आज तुझे मारे बगैर नहीं छोड़ूंगा।"

तोता बोला, "तो मन लगाकर सुनो, मैं तुम्हें चार बातें बताऊंगा। अगर तुम उन्हें मानोगे तो कभी दुःख नहीं पाओगे। लो अब सुनो :—

"पहली बात यह है कि हाथ आए शत्रु को कभी नहीं छोड़ना चाहिए।"

माली ने सिर हिलाकर स्वीकार किया कि सच-मुच यह बड़ी अच्छी सीख है।

तोता बोला, "अब दूसरी बात सुनो। अनहोनी

बात का कभी विश्वास मत करना ।"

माली बोला, "यह भी अच्छी सीख है। अच्छा अब तीसरी बात बताओ ।"

तोता बोला, "जो बात बीत गई, उसके लिए कभी पछताना मत। बीत गई, सो बीत गई ।"

माली बोला, "यह भी तुमने अच्छी बात बताई।

अब चौथी बात बताओ ।"

तोता बोला, "चौथी बात बड़े काम की है। उसे तो तभी बताऊंगा, जब मुझे छोड़ दोगे ।"

माली ने तोते को छोड़ दिया। वह एक ऊंची डाल पर जा बैठा और बोला, "ऐ माली ! मेरे पेट में अण्डे-अण्डे जितने कई मोती हैं । तुम मुझे मार डालते तो वे मोती तुम्हें मिल जाते। किन्तु अब तो मैं तुम्हारे हाथ आने से रहा। किन्तु तुमने मेरी पहली सीख ही नहीं मानी । मैंने तुम्हें कहा था कि हाथ आए शत्रु को नहीं छोड़ना चाहिए ।"

अब तो माली पछताने लगा । उसे इस बात का बड़ा पछतावा था कि मैंने तोते को क्यों छोड़ दिया । मार डालता तो इतने कीमती मोती मुझे मिलते ।

तोता बोला, "अरे माली ! तू तो एक दम मूर्ख है। तुझे सीख देना बेकार गया। अगर तू मेरी पहली बात मानता तो मुझे छोड़ता नहीं । दूसरी बात मानता तो इस अनहोनी बात पर कभी विश्वास न करता कि मेरे पेट में अण्डे-अण्डे जितने बड़े मोती हैं । भला इतने बड़े मोती भी कभी किसी ने देखे हैं और तुमने मेरी तीसरी बात पर भी ध्यान नहीं दिया । मैंने तुम्हें बताया था कि जो बात बीत गई, उसके लिए पछतावा

नहीं करना चाहिए। अब तू इस बात के लिए क्यों पछता रहा है कि तुमने मुझे क्यों छोड़ दिया ? कोई अच्छी सीख दे, तो यह मत समझना कि सुन लेने से ही लाभ होगा। सीख से लाभ उठाना हो तो उसके अनुसार काम करना चाहिए। यही मेरी चौथी सीख है।"

यह कहकर तोता उड़ गया।

अभ्यास

1. गंगाराम तोता कहां रहता था और क्या करता था ?
2. माली ने गंगाराम को क्यों पकड़ा ?
3. पकड़े जाने पर गंगाराम ने माली से क्या कहा ?
4. माली को तोते ने तीन सीखें क्या दीं ?
5. तोता माली के हाथ से कैसे छूटा ?
6. जब माली पछताने लगा तो तोते ने क्या कहा ?
7. इस कहानी से क्या शिक्षा मिलती है ?

लालच बुरी बला

एक घने जंगल में एक तालाब था। तालाब के किनारे जामुन का एक बड़ा पेड़ था। इस पेड़ पर बन्दर और बन्दरिया का एक जोड़ा रहता था।

एक दिन बन्दर जामुन की टहनी से दूसरे टहनी पर कूद रहा था कि नीचे तालाब में जा गिरा। पता नहीं क्या जादू हुआ कि तालाब में गिरते ही वह बन्दर से आदमी बन गया।

बन्दरिया ने सोचा, 'मेरा बन्दर तो आदमी बन गया। क्यों न मैं भी तालाब में डुबकी लगाकर स्त्री बन जाऊं।' वह पेड़ पर से तालाब में कूद पड़ी। तालाब में डुबकी लगाते ही वह भी सुन्दर स्त्री बन गई।

अब तो दोनों की प्रसन्नता का ठिकाना नहीं रहा। दोनों फिर उसी तालाब के किनारे घर बना कर रहने लगे।

कुछ दिनों बाद बानर से नर बने उस आदमी

ने सोचा, 'यदि इस जामुन से तालाब में गिरने से मैं वानर से नर बन सकता हूं तो क्या दोबारा उसी तरह गिरकर देवता नहीं बन सकता।' उसने यही बात अपनी पत्नी से कही।

पत्नी बोली, "हमें अधिक लोभ नहीं करना चाहिए। बन्दर से मानव बन गए, यही क्या कम है ! हमें कोई दुःख भी नहीं है। फिर क्या जरूरत है कि हम कुछ और बनने की बात सोचें। इसके साथ ही क्या पता दोबारा वैसा करने से कुछ गड़बड़ न हो जाए।"

उसके समझाने पर भी पति नहीं माना। अन्त में वह जामुन पर चढ़ा और तालाब में कूद पड़ा। जब बाहर निकला तो वह आदमी से फिर बन्दर बन गया था। इससे बड़ा दुःखी हुआ। वह एक बार फिर पानी में कूदा पर रहा बन्दर का बन्दर ही।

अब बन्दर ने उस स्त्री को समझाया कि तुम भी फिर एक बार मेरी तरह तालाब में कूदकर बन्दरिया बन जाओ। पर वह नहीं मानी। भला मनुष्य से बन्दर कौन बनना चाहेगा।

अब वे दोनों अलग-अलग रहने लगे। एक दिन

राजा के कर्मचारी किसी काम से उधर आ निकले। उन्होंने जंगल में उस अकेली सुन्दर स्त्री को देखा तो उसे राजा के पास ले गए । राजा ने उसके साथ विवाह करके उसे अपनी रानी बना लिया ।

कुछ दिनों बाद बन्दर का तमाशा दिखाने वाला एक मदारी जंगल से उस बन्दर को पकड़कर ले गया। मदारी ने उस बन्दर को तरह-तरह के नाच सिखाए। वह कई तरह के तमाशे दिखाता । उसके तमाशे देखकर लोग तालियां पीटते और मदारी को इनाम देते ।

घूमता-फिरता मदारी उस राजा की राजधानी में पहुंचा, जिसमें उसकी बन्दरिया रानी बनी हुई थी ।

मदारी ने राजा से प्रार्थना की कि मैं आपकी राजसभा को अपने बन्दर के अनोखे करतब दिखाना चाहता हूं ।

राजा मान गया । मदारी तमाशा दिखाने की तैयारी करने लगा। पर आज पता नहीं क्या हुआ कि बन्दर जिद्द करके बैठ गया। उसने एक भी तमाशा नहीं दिखाया। मदारी ने पहले पुचकारा, फिर डराया-

धमकाया, फिर भी नहीं माना तो मारने-पीटने लगा। राजसभा के सामने मदारी की बड़ी किरकिरी हुई। बन्दर रोता रहा और रोता रहा।

बात यह थी कि सिंहासन पर राजा के साथ रानी भी बैठी हुई थी। बन्दर ने उसे पहचान लिया था। यह जो रानी बनी बैठी थी, एक दिन इस बन्दर की बन्दरिया ही तो थी। फिर जब दोनों नर-नारी बन गए तब भी वह उसकी पत्नी थी और आज वह रानी है और यह बन्दर !

बस इसी दुःख के मारे बन्दर मार खाकर भी तमाशा दिखाने को तैयार नहीं था। पर बेचारे मदारी की समझ में कुछ नहीं आ रहा था कि बात क्या है ?

रानी ने मदारी से कहा, "इस बन्दर को मेरे पास ले आओ। मेरे समझाने पर यह तमाशा दिखाएगा।"

मदारी बन्दर को रानी के पास ले गया। रानी ने उसके कान में कहा, "अब पिछली बातों को याद करके दुःखी होने से क्या लाभ ! मैंने तुम्हें उस समय भी समझाया था। आज फिर समझा रही हूं। इस बात को अच्छी तरह समझ लो कि मैं रानी हूं और तुम बन्दर। तुम्हें अपने मालिक की बात माननी चाहिए।"

रानी के समझाने पर बन्दर ने रोना बन्द कर दिया और तमाशा दिखाने लगा। उसने ऐसे-ऐसे करतब दिखाए कि सारी राजसभा दंग रह गई। राजा ने उसे खूब इनाम दिया। फिर रानी ने मदारी को उस बन्दर की कीमत दे दी और उसे फिर जंगल में छोड़ दिया।

अभ्यास

1. बन्दर और बन्दरिया आदमी कैसे बने ?
2. पुरुष फिर बन्दर कैसे बना ?
3. स्त्री रानी कैसे बनी ?
4. मदारी ने बन्दर को क्या सिखाया ?
5. राजसभा में बन्दर ने तमाशा क्यों नहीं दिखाया ?
6. रानी ने बन्दर के कान में क्या कहा ?

जैसा कहो, वैसा करो

एक थी गाय। उसका नाम था नन्दिनी। रंग उसका दूध की तरह सफेद था। पूँछ बड़ी लम्बी और थन भरे हुए, लम्बे। वह झुंड के साथ चलती तो सबसे आगे रहती। ऐसा लगता जैसे यह सब गायों की रानी हो।

वह कोमल और हरी घास की खोज में अकेली ही इधर-उधर निकल जाती।

जहां वह चरने जाती उस पर्वत पर एक नदी बहती थी। पर्वत में कई गुफाएं थीं। यह जंगल बड़ा घना था। पास-पास खड़े वृक्ष, कांटेदार झाड़ियां और उन पर उलझी-फैली हुई बेलों के कारण यहां दिन में भी अंधेरा रहता था। इस जंगल में शेर, बाघ और चीते; हाथी, रीछ और भालू; हिरन, बन्दर और सियार; तरह-तरह के जानवर रहते थे।

एक बड़ा डरावना बाघ था। वह बड़ा बलवान् और लम्बे-लम्बे दांतों वाला था। ऐसा लगता था

जैसे यही इस जंगल का राजा है ।

एक दिन चरते हुए नन्दिनी दूर निकल गई । यह बड़ा घना जंगल था । वह बाघ यहीं रहता था । गाय को देखते ही वह अंगड़ाई लेकर उठ खड़ा हुआ और ज़ोर से दहाड़ा ।

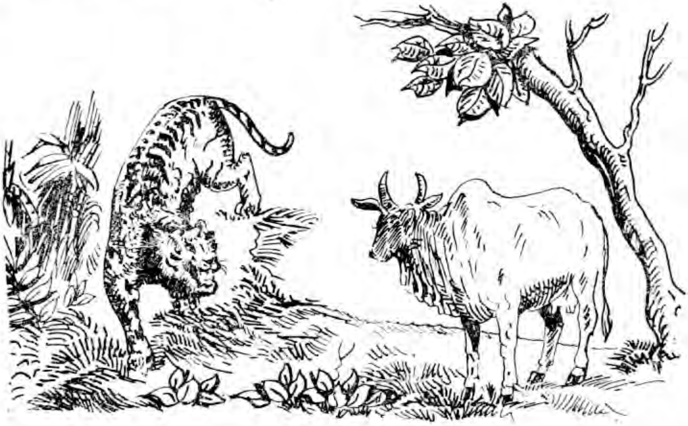

नन्दिनी मारे डर के कांपने लगी । वह ज्यों ही भागने लगी कि बाघ ने उसका रास्ता रोक दिया । वह बोला, "अब तू मेरे चंगुल से बच कर नहीं जा सकती । मैं कई दिनों से भूखा हूं । आज तेरी मौत ही तुझे घेर कर मेरे पास ले आई है ।"

नन्दिनी बोली, "मैं मरने से नहीं डरती । पर मैं मर जाऊंगी तो मेरे छोटे बछड़े का क्या होगा ! वह

अभी तक दूध ही पीता है। घास को तो छूता भी नहीं। तुम मुझे कुछ देर के लिए जाने दो। मैं उसे दूध पिलाकर और चाट-चूमकर लौट आऊंगी। मैं उसे अपनी सहेलियों को सौंप आऊंगी। कुछ समझा-बुझा भी आऊंगी। फिर तुम मुझे मारकर खा लेना। मेरे वही एक बछड़ा है। तुम जानते हो कि गायों को अपने बछड़े कितने प्यारे होते हैं। मैं सच कहती हूं कि मैं फिर तुम्हारे पास लौट आऊंगी!"

बाघ बोला, "अरी भोली-भाली गाय! तू मुझे भी अपनी ही तरह भोला समझती है। मैं गाय नहीं बाघ हूं और कई दिनों से भूखा हूं। मैं अभी तुझे जाने दूं तो फिर तू लौटकर मरने के लिए मेरे पास क्यों आएगी! मैं तो तुझे अभी मारूंगा।"

गाय बोली, "देखो बाघ, हम गायें छल-कपट नहीं जानतीं। मैं सौगन्ध खाकर कहती हूं कि बछड़े को दूध पिलाकर अवश्य लौट आऊंगी।"

बाघ ने उसकी बात पर विश्वास कर लिया और उसे जाने दिया। वह उसके लौटने की राह देखता हुआ वहीं बैठा रहा।

गाय घर की ओर चली। उसकी आंखों से छम-

छम आंसू बह रहे थे और वह बार-बार रंभा रही थी। उसके थनों से दूध टपकने लगा था।

घर जाकर उसने रोते-रोते बछड़े को चूमा-चाटा। फिर उसे दूध पिलाया।

बछड़े ने जब मां को आंसू टपकाते और जल्दी करते देखा तो वह भी घबरा गया।

नन्दिनी उसे समझाते हुए बोली, "प्यारे बेटे ! आज मैं आखिरी बार तुम्हें अपना दूध पिला रही हूं। मुझे जंगल में एक बाघ ने घेर लिया था। मैं वापस लौटने का वचन देकर तुमसे मिलने आई हूं। मैं अभी उसके पास लौट जाऊंगी और वह मुझे खाकर अपनी भूख मिटाएगा।"

बछड़ा बोला, "मैं भी तुम्हारे साथ चलूंगा बाघ मुझे भी खा ले। मैं तुम्हारे बिना कैसे जीवित रहूंगा ?"

नन्दिनी बोली, "मेरे लाल, तू क्यों मरेगा। भगवान् करे तेरी सौ साल की उमर हो। मेरी सहेलियां और तेरी नानी तुझे अपना दूध पिलाकर पाल लेंगी। हां, मेरी इतनी बात याद रखना—लालच, गुस्सा और आलस—इन तीनों से बचना।"

बछड़े को समझा-बुझाकर नन्दिनी उसे साथ लेकर अपनी मां और सहेलियों के पास गई। उनसे रो-

रोकर गले मिली और सारी बात बताई। फिर बछड़ा उनको सौंप दिया और उन्हें कहा कि इसे कोई दुःख-कष्ट न हो। इसकी रक्षा करना। उसकी मां और सखियों ने कहा, "तुझे उस दुष्ट बाघ के पास बिल्कुल नहीं जाना चाहिए। प्राण बचाने के लिए एक झूठी सौगन्ध खाना कोई पाप थोड़े ही है।"

परन्तु नन्दिनी ने उनकी बात नहीं मानी। वह उनके बार-बार रोकने पर भी विदा लेकर जंगल में बाघ के पास जा पहुंची।

उसी समय पीछे से उसका बछड़ा भी पूंछ उठाए वहां आ पहुंचा।

गाय बाघ से बोली, "ऐ बाघ! मैंने तुम्हें जो वचन दिया था, उसके अनुसार वापस आ गई हूं। मेरे मना करने पर भी यह बछड़ा मेरे पीछे-पीछे आ गया है। अब यदि मुझे खाकर भी तुम्हारी भूख न मिटे तो इस बछड़े को भी खा लेना।"

गाय की सचाई और बछड़े के प्यार को देखकर बाघ दंग रह गया! वह बोला, "आज से तू मेरी बहन हुई और यह तुम्हारा बछड़ा मेरा भानजा हुआ।"

तुमने अपने भले आचरण से मेरी आंखें खोल दीं।

अभ्यास

1. नन्दिनी कैसी गाय थी ?
2. जब बाघ ने नन्दिनी को पकड़ लिया तो वह क्या बोली ?
3. बाघ ने गाय को क्यों जाने दिया ?
4. गाय ने बछड़े से क्या कहा ?
5. गाय ने अपनी सखियों की बात क्यों नहीं मानी ?
6. बछड़ा गाय के पीछे क्यों चला गया ?
7. बाघ ने गाय को क्यों नहीं मारा ?

सच्चे मित्र

एक नगर में दो मित्र रहते थे। एक का नाम था दमन और दूसरे का था फतेह। इस नगर का राजा बड़ा अत्याचारी था। वह प्रजा को बहुत सताता था। लोग उसके नाम से थरथर कांपते थे।

दोनों मित्रों ने इस राजा को राजगद्दी से उतारने की एक योजना बनाई।

राजा के गुप्तचरों को इस योजना का पता लग गया। राजा के सिपाहियों ने दमन को पकड़कर जेल में डाल दिया और तीन दिन बाद फांसी पर चढ़ाने की सज़ा दे दी।

दमन फांसी पर लटकने से पहले अपनी पत्नी और पुत्र से मिलना चाहता था। उसने राजा से प्रार्थना की। किन्तु राजा फांसी की सज़ा वाले अपराधी को छुट्टी कैसे दे देता! राजा ने पहले तो छुट्टी देने से इनकार कर दिया। फिर कहा कि अगर फतेह तुम्हारे बदले कैदी बन जाए तो तुम्हें छुट्टी मिल सकती है। परन्तु

अगर तुम समय पर लौटकर नहीं आए तो ठीक समय पर तुम्हारे बदले फतेह को फांसी पर लटका दिया जाएगा।

फतेह यह सब सुन रहा था। उसने दमन के बदले जेल जाना और उसके न लौटने पर फांसी पर लटकना स्वीकार कर लिया। राजा भी यही चाहता था। उसने दमन को छोड़ दिया और फतेह को कैद कर दिया। राजा ने सोचा, 'इस तरह एक ढेले से दो शिकार हो जाएंगे। दमन तो कभी यहां लौट कर आएगा नहीं और फतेह को उसके बदले फांसी पर लटका दिया जाएगा।'

तीसरे दिन सूर्य डूबने से पहले-पहले दमन को पहुंच जाना चाहिए था। वह घर को चला गया।

अपनी पत्नी और पुत्र से मिलकर और उन्हें समझा-बुझाकर दमन वापस लौटने लगा। उसने नौकर को कहा कि तुरंत मेरा घोड़ा ले आओ।

नौकर ने उत्तर दिया, "घोड़ा आज ही अचानक मर गया है।"

दमन समझ गया कि उसके घोड़े को जान-बूझकर मरवा दिया गया है। यह सब राज-

कर्मचारियों की शरारत थी। उन्होंने घोड़े को जहर दे दिया था। यह सब इसलिए किया गया था कि दमन समय पर वापस न पहुंच सके।

दमन ने गुस्से में भरकर नौकर से कहा, "मूर्ख, तू नहीं जानता कि तुमने मेरे घोड़े को मारकर मेरे प्यारे मित्र को भी मार डाला है।"

वह पैदल ही चल पड़ा। पर रास्ता लम्बा था और पैदल चलकर वह समय पर नहीं पहुंच सकता था। वह कई मील पैदल चलता रहा।

चलते-चलते रास्ते में उसे घोड़े पर चढ़ा एक व्यापारी मिला। उसने बड़ी नम्रता के साथ व्यापारी को कहा कि वह मुंह मांगी कीमत लेकर घोड़ा उसे दे दे। पर व्यापारी अपना घोड़ा बेचने को तैयार नहीं हुआ। उसने व्यापारी को बताया कि यदि उसने घोड़ा नहीं बेचा तो उसके बदले उसके मित्र को फांसी चढ़ना पड़ेगा। पर व्यापारी फिर भी तैयार नहीं हुआ।

अब तो दमन को बड़ी चिन्ता हुई। उसने अपना रुपयों से भरा बटुआ निकालकर व्यापारी को पकड़ा दिया और उसे जबर्दस्ती घोड़े से उतारकर अपने आप घोड़े पर चढ़ गया। उसने घोड़े को जोर की

एड़ लगाई। घोड़ा हवा से बातें करने लगा। व्यापारी देखता रह गया। उसके देखते-देखते घोड़े पर सवार दमन आंखों से ओझल हो गया।

सारे रास्ते में वह घोड़े को दौड़ाता ले गया। घोड़ा भी दौड़ता ही गया।

अन्त में दमन ठीक समय पर जेल के दरवाज़े पर जा पहुंचा।

जब वह जेल के दरवाज़े पर पहुंचा तो वहां लोगों की भीड़ जमा थी। लोग दमन को बुरा-भला कह रहे थे। पर फतेह को उसके वापस न आने का ज़रा भी दुःख नहीं था। वह तो और भी प्रसन्न था

कि वह अपने मित्र के लिए जान दे रहा है। वह लोगों से कह रहा था कि दमन मेरा सच्चा मित्र है। वह मुझे कभी धोखा नहीं दे सकता। हो सकता है, वह रास्ते में जाते या आते समय किसी दुर्घटना में मर गया हो। अगर वह किसी विपत्ति में न फंसा होता तो अब तक जरूर लौट आता।

ज्यों ही घोड़े की पीठ से उतरे दमन को लोगों ने देखा, वे चिल्ला पड़े, "दमन आ गया, दमन आ गया। दमन सच्चा मित्र है।"

दमन दौड़कर फतेह के पास पहुंचा और बोला, "मित्र ! मुझे क्षमा कर दो। तुम अब यहां से बाहर निकलो। मैं भगवान् की कृपा से समय पर आ गया हूं और फांसी पर लटकने के लिए तैयार हूं।"

राजा को जब इस बात का पता लगा तो वह दोनों मित्रों की प्रशंसा करने लगा। उन्हें एक-दूसरे के लिए अपनी जान तक दे देने के लिए तैयार देखकर राजा का मन पसीज गया। उसने दमन की फांसी की सजा रद्द कर दी और उसे छोड़ दिया।

राजा ने कहा, "आज से ये दोनों मेरे भी मित्र हुए। ऐसे सच्चे मित्रों को मैं जुदा करना नहीं चाहता।

अभ्यास

1. दोनों मित्र राजा को गद्दी से क्यों उतारना चाहते थे ?
2. राजा ने दमन को घर क्यों जाने दिया ?
3. राजकर्मचारी क्यों चाहते थे कि दमन निश्चित समय पर वापस न पहुंचे ?
4. जब रास्ते में व्यापारी ने दमन को घोड़ा नहीं दिया तो उसने क्या सोचा ?
5. जेल के दरवाजे पर लोगों की भीड़ क्यों जमा थी ?
6. इस कहानी का कोई और नाम बताओ ?

जादुई कूची

बहुत पुरानी बात है। चीन के किसी गांव में एक लड़का रहता था। उसका नाम था ल्यांग। ल्यांग लकड़ी बेचकर अपना गुजारा करता था।

ल्यांग को तस्वीरें बनाने का बहुत शौक था। वह कोयले से या खड़िया से तस्वीरें बनाता था। पर अच्छी तस्वीरें बनाने के लिए तो अच्छी-अच्छी कूचियां और कई तरह के रंग चाहिएं। बेचारा गरीब लड़का इन चीजों को खरीदने के लिए रुपए कहां से लाए !

एक दिन उसने अपने गांव के एक चित्रकार को चित्र बनाते देखा। वह बड़ी देर तक उसके पास खड़ा रहा और एकटक देखता रहा। उसने मन में सोचा, 'मेरे पास सामान होता तो मैं भी अच्छे-अच्छे चित्र बना सकता था।' अन्त में उसने हिम्मत करके उस चित्रकार से कहा, "क्या आप थोड़ी देर के लिए अपनी कूची मुझे दे सकते हैं।"

चित्रकार ने अपनी कूची देने से इनकार कर दिया। दूसरे दिन ल्यांग ने लकड़ी का टुकड़ा लेकर उसे छीला और कलम-सी बना ली। वह उसी कलम से कीड़ों-मकोड़ों और पक्षियों के चित्र बनाने लगा। जिस चीज का चित्र बनाना होता, उसे वह ध्यान से देखता है फिर चित्र बनाता। उसके बनाए चित्र बड़े बढ़िया होते। देखने वाले को लगता कि यह चित्र नहीं, सचमुच की चीज है।

एक रात को ल्यांग को बड़ा अनोखा सपना हुआ। उसे एक लम्बी दाढ़ी वाला बूढ़ा दिखाई दिया। बूढ़े ने कहा, "बेटा ! यह लो एक बढ़िया कूची। इसे कहीं खोना मत ! तुम इस कूची से जो चित्र बनाओगे, वे बहुत बढ़िया बनेंगे।"

ल्यांग की आंख खुल गई। अभी-अभी हुआ सपना उसे याद था। पर यह सपना तो एक तरह से सच्चा सपना था। क्योंकि ल्यांग के हाथ में बहुत ही बढ़िया सोने की कूची थी।

ल्यांग बिछौने से उठ बैठा और चित्र बनाने लगा। सबसे पहले उसने मुर्गे का चित्र बनाया। उसने मुर्गे का चित्र ज्यों ही पूरा किया, मुर्गा पंख फड़फड़ाने लगा। फिर उसने 'कुकडूं कूं' की आवाज लगाई और

बाहर निकल गया ।

फिर उसने एक मछली का चित्र बनाया । वह मछली भी उछल कर तालाब में चली गई ।

इस जादू की कूची को पाकर ल्यांग की प्रसन्नता का ठिकाना नहीं रहा ।

उस दिन से ल्यांग गांव में घूम-घूम कर गरीबों के घर जाता और उनकी जरूरत की चीजों के चित्र बनाकर उन्हें दे देता । वे चित्र सचमुच की चीजें बन जाते । इस तरह वह गरीब लोगों की सहायता करता ।

धीरे-धीरे बात फैल गई । लोग इस अनोखे चित्रकार और उसके चित्रों को देखने आते । गांव के धनी जमींदार को पता लगा कि ल्यांग ऐसे चित्र बनाता है जो सचमुच की चीजें बन जाते हैं तो जमींदार ने ल्यांग को बुलाकर कहा कि मेरे लिए एक चित्र बनाओ । पर ल्यांग ने मना कर दिया । जमींदार को गुस्सा आया । उसने ल्यांग को कमरे में बन्द कर दिया ।

तीन-चार दिन बाद जमींदार ने सोचा, 'भूख-प्यास से ल्यांग अब तक मर गया होगा ।' वह उसे देखने पहुंचा । पर जब कमरा खोला तो ल्यांग खीर खा रहा था । जमींदार को बड़ा आश्चर्य हुआ कि यह खीर

कहां से आई ?"

जमींदार ने ल्यांग को मारने के लिए तलवार निकाल ली। किन्तु तलवार का वार होने से पहले ही ल्यांग ने तीर चला कर जमींदार को मार डाला।

अब तो ल्यांग वहां से भाग खड़ा हुआ और नगर में पहुंचा। बाज़ार में खड़े-खड़े उसने हंस का एक चित्र बनाया। लोगों के देखते ही देखते हंस ने पंख फैलाए और उड़ गया। लोगों के अचरज का ठिकाना नहीं रहा।

फिर तो यह खबर सारे शहर में फैल गई। राजा के पास भी यह खबर पहुंची। राजा ने तुरन्त सिपाही भेजकर ल्यांग को दरबार में बुला लिया।

जब ल्यांग राजा के सामने पहुंचा तो राजा ने आज्ञा दी, "मेरे लिए एक सुन्दर स्त्री का चित्र बनाओ।"

किन्तु ल्यांग ने सुन्दर स्त्री का चित्र न बनाकर एक मेंढक का चित्र बना दिया।

राजा को ल्यांग की ढिठाई पर बड़ा गुस्सा आया। उसने ल्यांग की सोने की कूची ही छीन ली।

अब राजा उस कूची से चित्र बनाने लगा। राजा उस कूची से सोने के पहाड़ का चित्र बनाने लगा। पहाड़ मिट्टी का बना और फट गया।

राजा ने सोचा, "इस तरह काम नहीं बनेगा। उसने ल्यांग से कहा, "ऐ छोकरे ! अगर तू मेरी बात मानेगा तो मैं तुम्हें बहुत बड़ा इनाम दूंगा।" राजा ने सोचा, लालच देने से लड़का मान जायेगा।

ल्यांग ने राजा से पूछा, "मुझे क्या करना होगा ?"

राजा ने कहा, "तुम मेरे लिए एक बढ़िया-सी नाव का चित्र बनाओ।"

ल्यांग ने राजा की बात मान कर नाव का चित्र बनाया। वह सचमुच की नाव बन गई। राजा नाव में जा बैठा। नाव चल पड़ी। ल्यांग ने समुद्र के चित्र में लहरें बना दीं। तब समुद्र में लहरें उठने लगीं और नाव लहरों पर हिचकोले खाने लगी।

राजा मारे डर कर चिल्ला पड़ा, "बस करो। नाव को किनारे पर लौटने दो।" किन्तु ल्यांग ने राजा की बात अनसुनी कर दी। उसने और बड़ी-बड़ी लहरें बना दीं।

समुद्र में और भी जोर से तूफान आ गया। राजा की नाव उलट गई और लहरों में समा गई। राजा का कहीं पता ही नहीं लगा।

अब ल्यांग वहां से भी भागा। राजा के लोग उसे खोजने निकल पड़े। पर वह उन्हें कभी नहीं मिला।

अभ्यास

1. ल्यांग किस चीज से चित्र बनाता था ?
2. ल्यांग को सोने की कूची कैसे मिली ?
3. जादू की कूची से चित्र बनाने पर क्या होता था ?

4. ल्यांग ने गांव के गरीबों के लिए क्या किया ?
5. जमींदार ने ल्यांग को कैद क्यों किया ?
6. राजा ने ल्यांग की कूची क्यों छीन ली ?
7. राजा कैसे डूबा ?

दया-धर्म

एक था राजा। उसकी एक बेटी थी। बड़ी सुन्दर, चांद-सा मुखड़ा, हिरन की-सी आंखें, मोतियों जैसे दांत। वह बड़ी हुई तो राजा को उसके विवाह की चिन्ता लगी। एक अच्छा-सा वर राजा ने उसके लिए खोजा। विवाह का दिन तय हो गया। बरात के स्वागत-सत्कार की तैयारियां होने लगीं। औरतें मंगल गीत गाने लगीं। तोरण-मंडप तैयार किए गए। तरह-तरह के बाजे बजने लगे।

मेहमानों के ठहरने के स्थान सजाए गए। जनवासे की शोभा का तो कहना ही क्या! खाने के लिए तरह-तरह के पकवान पकने लगे। मेहमानों के लिए मांस-भोजन भी चाहिए। इसके लिए एक बाड़े में तरह-तरह के जानवर इक्ट्ठे कर लिए गए। बकरे, मेंढे, मुर्गे, हिरन, बारहसिंगे, खरगोश, मछलियां। तरह-तरह की चिड़ियां पिंजरों में लटक रही थीं।

बरात नगर के पास पहुंच गई। ढोल, नगारे,

शहनाइयां, नरसिंगे, जोर-जोर से बजने लगे। झुंड की झुंड औरतें मंगल-गीत गाने लगीं।

हिरन तो गाना सुनने के शौकीन होते ही हैं। बाजे-गाजे और गीत सुनकर बाड़े के पशुओं में से एक हिरन बोला—अहा! कैसी सुरीली आवाज है। जी करता है कि बाड़ को एक ही छलांग में फांदकर गाने वालों के पास जा पहुंचूं।

उसकी बात सुनकर पास खड़ा खरगोश बोला—अजी तुम भी परले दर्जे के बुद्धू हो। इस गाने के शौक में तुम्हें कितने दुःख उठाने पड़ते हैं, पर तुम हो कि फिर भी नहीं सोचते। बस, कहीं सुरीली तान सुनी कि लट्टू हो गए और फंस गए शिकारी के जाल में। जिस गीत को सुनकर तुम खुश हो रहे हो, वह हम सबकी मौत का गीत है। कुछ समझे ?

मौत की बात सुनते ही हिरन ठिठक गया। उसकी सारी खुशी हिरन हो गई। फिर बोला—हमारे लिए मौत का गीत है, यह बात तुम्हें कैसे मालूम हुई! हमें भी तो कुछ समझाओ।

एक बारहसिंगा बीच में ही बोल पड़ा—क्यों खामखाह भय फैलाते हो। यहां न शेर है, न चीता। न जाल, न शिकारी। हम तो राजा के मेहमान

हैं—पेट भर हरी-हरी घास मिल जाती है, बढ़िया साफ पानी पीने को मिलता है। खाओ, पियो, मौज उड़ाओ। यहां डर किस बात का ?

यह सुना तो एक लम्बे सींगों वाले बकरे से न रहा गया। उसने कहा—यह सुख-सुविधा जिसने तुम्हें दी है, वही तुम्हारी जान भी लेगा। यह तो हो सकता है कि चीते को कभी चकमा देकर तुम भाग निकलो पर इस बाड़े में से बचकर नहीं जा सकते। वह देखो एक डरावना-सा आदमी तुम्हारी गर्दन काटने के लिए छुरे को तेज कर रहा है। देखा तो सभी कांप उठे।

फिर बारहसिंगा कहने लगा—भाई हम तो ठहरे वनवासी। शहर-गांव के रीति-रिवाज क्या जानें ! ये बकरा भाई, मेंढा मामा और मुर्गा मौसा नगरवासी हैं। इस बारे में इनकी बात ही भरोसे लायक है। आदमी तो होता ही शैतान है, पूरा ठग। ठगी में इसका पार कौन पा सकता है। नकली हथनी बनाकर और उसके पास खोदे हुए गढ़े को घास-फूस से छाकर यह हाथियों को पकड़ता है। बीन बजाकर सांपों को पिटारी में कैद कर लेता है। आटे की गोली कांटे पर लगाकर मछलियों को फंसाता है। जंगल के राजा शेर तक को पिंजरे में बंद कर देता है। इसकी

काली करतूतों को कहां तक गिनाएं।

पास ही छोटे से कुण्ड में कुछ मछलियां तैर रही थीं। उनमें से एक लाल मछली बोली—देखो जी, जरा धीरे-धीरे बात करो ! तुम्हारे शोर-गुल से हमारे तो नाक में दम आ गया है।

एक मुर्गे ने कहा—अब अपने दम की ज्यादा फिकर मत करो। वह निकलने ही वाला है। तुम्हें तलने के लिए तेल गरम किया जा रहा है।

अब की मुर्गा बोला तो सब का ध्यान उसकी तरफ खिंच गया।

अरे मुर्गे, अगर तुम्हारी बात सच है तो फिर फिर तुम उड़कर कहीं भाग क्यों नहीं जाते ? हम तो बाड़े में बन्द हैं। पर तुम तो भागकर अपनी जान बचाओ। बारहसिंगे ने कहा।

मुर्गा बोला—पर यह तो बताओ कि भागकर जाएं भी तो कहां ! यह शैतान आदमी कहां नहीं है ? भाग कर भी तो इससे पीछा छूटने वाला नहीं है।

पशु-पक्षियों में ये बातें हो ही रही थीं कि सामने से एक सजा हुआ रथ निकला। यह दूल्हे की सवारी थी। इसे देखकर ऊंचे उलझे हुए सींगों वाला एक बारहसिंगा बोला—यही वे महाशय हैं जिनके स्वागत-

सत्कार के लिए हमारी जानें ली जाएंगी। यह सुनते ही सब पशु-पक्षी शोर मचाने लगे। जो खूंटों से बंधे थे, वे रस्सी तोड़ने के लिए जोर लगाने लगे; जो पिंजरों में बंद थे वे पंख फड़फड़ाने लगे।

जानवरों का यह शोर दूल्हे के कानों में पड़ा। उसने रथवान को रथ रोकने की आज्ञा दी। रथ बाड़े के पास खड़ा हो गया। दूल्हा राजकुमार रथ से उतर कर बाड़े के दरवाजे की तरफ चला। बड़ा दया-वान् चेहरा था उसका। उसने बाड़े के दरवाजे की कुंडी खोल दी। इतने में बाड़े का चौकीदार लाल-लाल आंखें किए वहां आ पहुंचा, पर जब उसने देखा कि कुण्डी खोलने वाला दूल्हा खुद ही है तो सहम गया।

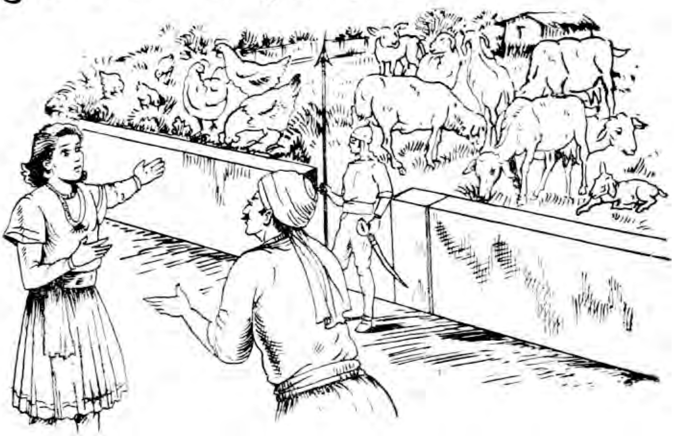

राजकुमार ने रथवान को कहा कि सारे पशुओं को खोल दो और सारे पंछियों को पिंजरों से बाहर निकाल दो।

बाड़े का चौकीदार दौड़कर राजा के पास पहुंचा। हाथ जोड़कर कहने लगा—महाराज! दूल्हे राजकुमार ने बाड़े के सारे जीवों के बन्धन खुलवा दिए।

राजा दूल्हे के पास गया और बोला—यह आपने क्या किया ?

महाराज ! मैंने निरापराध जीवों को प्राण-दान दिया है।

राजा ने उलाहना देते हुए कहा—आप क्षत्रियों का धर्म भूल गए लगते हैं।

नहीं महाराज ! मैं क्षत्रिय धर्म को भूला नहीं हूं। दूसरों की रक्षा करना ही तो हमारा धर्म है न ? और उसी को मैंने निभाया है ! ब्याह-शादी करवाने से अगर इतने जीवों की जान जाती है तो मैं कुंआरा ही अच्छा।

राजा ने हंसी-हंसी में कहा—तो क्या घर-गृहस्थी नहीं करेंगे ? संन्यास ले लेंगे ?

राजकुमार ने कहा—जरूर संन्यास ले लूंगा। मनुष्य जन्म लिया है तो क्या पाप का जीवन बिताने

के लिए ? मैं तो सभी जीवों को सुखी देखना चाहता हूँ ।

फिर रथवान को कहा—मेरा रथ वापस ले चलो ।

देखते-देखते रथ वापस चला गया । यह खबर क्षण भर में चारों तरफ फैल गई । मंगल-गीत बन्द हो गए ।

वही राजकुमार बाद में जैन तीर्थंकर नेमिनाथ स्वामी हुए ।

अभ्यास

1. राजा ने तरह-तरह के जानवर किस लिए इकट्ठे किए थे ?
2. शिकारी हिरन को किस तरह पकड़ते हैं ?
3. पशु दूल्हे के रथ को देखकर शोर क्यों मचाने लगे ?
4. दूल्हे ने बाड़े के दरवाजे की कुण्डी क्यों खोल दी ?
5. क्षत्रियों का सच्चा धर्म क्या है ?
6. दूल्हे ने रथवान को रथ वापस ले चलने के लिए क्यों कहा ?
7. इस कहानी को अपने शब्दों में लिखो ?

बहकावे में मत आओ

एक तलाब के किनारे पीपल का पुराना पेड़ था। पेड़ की सबसे ऊंची डाली पर चील का घोंसला था। चील तो आप जानते ही हैं कि कितनी चालाक होती है।

पीपल के पेड़ की जड़ों में एक चूहा रहता था। उसका बिल बड़ा गहरा था।

पास के तालाब में एक मेंढक रहता था। मेंढक को इस बात का बड़ा अभिमान था कि मैं जल में और धरती पर जहां चाहूं रह सकता हूं। वह मछलियों से कहता, "तुम्हारा भी क्या जीवन है। पानी से बाहर क्षणभर भी नहीं जी सकती हो। मुझे देखो, चाहे पानी में रहूं, चाहे धरती पर, मजे ही मजे हैं।"

कभी-कभी चूहा तालाब में पानी पीने चला जाता तो मेंढक चूहे से कहता, "जरा पानी में तैरकर तो देखो, कितना मज़ा आता है।"

चूहा कहता, "न बाबा, यह काम मेरे बस का नहीं

है। मैं धरती पर ही अच्छा।"

तब मेंढक उस पर भी रोब गाँठता। बोलता, "मुझे देखो, जहाँ चाहूं, वहाँ रह सकता हूं। तुम लोग तो पता नहीं कैसे हो। मछली पानी से बाहर नहीं जा सकती और तुम पानी में नहीं आ सकते।"

चील मेंढक और चूहे को खाना चाहती थी। पर उसका वश नहीं चलता था। जब वह मेंढक को झपटना चाहती तो वह पानी में घुस जाता और जब चूहे पर झपटती तो वह बिल में चला जाता।

यह मेंढक रात भर टर्र-टर्र करता रहता। चूहा और चील उस की इस टर्र-टर्र से बड़े दुखी थे। उनकी नींद खराब होती थी। उन्होंने कई बार मेंढक से कहा पर वह मानता ही नहीं था। दोनों ही मेंढक से दुखी थे।

एक दिन चील चूहे के बिल के पास आकर बोली, "चूहेराम जी, इस मूर्ख मेंढक की टर्र-टर्र के मारे तो नाक के दम है। कोई ऐसा उपाय बताओ कि इससे छुट्टी मिले। सारी रात यह दुष्ट सोने नहीं देता है।"

चूहेराम ने कहा, "चील चाची, तुम्हारी बात तो ठीक है, पर करें क्या ! कुछ समझ में नहीं आता

है। हम दोनों में से कोई भी पानी में नहीं घुस सकता। फिर काम कैसे बने !"

चील बोली, "मुझे एक उपाय सूझा है। कर सको तो उसे करके देख लो। जब वह टर्र-टर्र की बकवास शुरू करे तो तुम किनारे से कंकड़ मारना शुरू कर दो।"

चूहा नासमझ था। इस बात के लिए झट तैयार हो गया।

अब जरा चील चाची की चालाकी देखिए। वह वहां से उड़ी और एक चक्कर काटकर मेंढक के पास जा पहुंची। उससे बोली, "जलथल के राजा जी ! भगवान् ने आप को बड़ा बढ़िया गला दिया है। कितना अच्छा गाते हैं आप। जब आप गाने लगते हैं तो मैं सारा काम छोड़कर आपका गाना सुनने लगती हूं। मुझे भूख-नींद सब कुछ भूल जाता है। मेरी आप से हाथ जोड़कर विनती है कि आप दो-चार बढ़िया-बढ़िया गाने रात को जरूर गाइएगा और आज पूर्णिमा है। पूरे चाँद की चांदनी छिटकी होगी। ऐसे में आपका गाना चार चांद लगा देगा।"

अपनी प्रशंसा किसे बुरी लगती है। फिर वह चाहे झूठी ही क्यों न हों। और दुनिया में जितने ठग

और चालाक हैं, वे झूठी प्रशंसा करके ही दूसरों को बुद्धू बनाते और ठगते हैं। मेंढक अपनी प्रशंसा सुन कर फूला नहीं समाया। आज रात होने से कुछ पहले ही उसने अपनी टर्र-टर्र शुरू कर दी।

चूहेराम पहले से ही तैयार बैठे थे। उधर टर्र-टर्र का राग शुरू हुआ, इधर इन्होंने पानी में कंकर फेंकने शुरू कर दिये।

कंकरियां फेंकने से मेंढक के रंग में भंग पड़ गया। उसने थोड़ी देर के लिए टर्र-टर्र का राग बन्दकर दिया। उसने कड़क कर कहा, "कौन पानी में पत्थर फेंक रहा है?"

चूहेराम बोला, "इतने गर्म क्यों हो रहे हो। जरा ढंग से बात करो। मैं हूँ तुम्हारा पड़ोसी चूहेराम! बोलो तुम्हें क्या कष्ट है!"

मेंढक बोला, "अरे मूर्ख! तू बहरा है क्या! तुझे सुनाई नहीं दे रहा है कि मैं गीत गा रहा हूं।"

चूहेराम बोला, "इस बकवास को तू गीत कहता है रे! बन्द कर यह अपनी टर्र-टर्र। मुझे सोने दे। तू करेगा तंग, तो मैं करूंगा जंग। समझे।"

मेंढक बोला, "जरा ज़बान संभालकर बात कर। जानता नहीं मैं कौन हूं।"

"मैं सब जानता हूं। तेरी टर्र-टर्र सुन रहा हूं और उछल कूद भी देखी है। भला चाहते हो तो चुप हो जाओ और मुझे सोने दो। नहीं तो मैं भी कंकड़ मारना बन्द नहीं करूंगा।"

दोनों में खूब 'तू-तू, मैं-मैं' होने लगी। न एक माने न दूसरा।

इतने में चील आ गई। बोली, "अरे पड़ोसी होकर क्यों लड़ रहे हो! बात क्या है!"

दोनों बोले, "चील चाची, लो, तुम्हीं हमारा फैसला कर दो। बोलो, हम दोनों में से बड़ा कौन है ?"

चील बोली, "इस बात का फैसला करना तो कोई

कठिन काम नहीं है। दोनों में जो ज्यादा बलवान् हो, वही बड़ा और जो हार जाए वह छोटा। और भाई, जो लड़ना नहीं चाहता हो वह बिना लड़े ही हार मान ले। पर आज इस बात का फैसला तो हो ही जाना चाहिए कि तुम दोनों में बड़ा कौन है ?"

चूहा और मेंढक दोनों भिड़ गए और लगे अपने-अपने दाव-पेच दिखाने।

चील तो यही चाहती थी। उसने जोर का झपट्टा मारा और दोनों को पंजों में पकड़कर उड़ गई। उसने अपने तीखे पंजों और नुकीली चोंच से दोनों को मार डाला और खा गई।

अभ्यास

1. मेंढक को किस बात का अभिमान था ?
2. मेंढक और चूहा चील के चंगुल में क्यों नहीं फँसते थे ?
3. चील और चूहा मेंढक से क्यों दुःखी थे ?
4. चील ने चूहे से क्या कहा ?
5. चील ने क्या चालाकी की ?
6. चालाक लोग दूसरों को कैसे बुद्धू बनाते हैं ?
7. चील ने दोनों को कैसे लड़ाया ?

गड़बड़झाला

एक घना जंगल था। जंगल तो जानवरों का घर ही होता है। उसमें शेर से लेकर खरगोश तक सभी तरह के छोटे-बड़े जानवर रहते थे।

उसी जंगल में बेल के पेड़ की जड़ों में एक खरगोश रहता था। यह खरगोश जब देखो तब मनघड़न्त बातें सोचता रहता। बिल्कुल बेसिर-पैर की बातें वह सोचता।

एक दिन वह पीठ के बल लेटा नीले आकाश की ओर देख रहा था। उसने सोचा, यदि यह नीला आकाश गिर पड़े तो क्या होगा! आकाश के गिर पड़ने के विचार से ही उसके रोंगटे खड़े हो गए। वह सीधा होकर बैठ गया।

उसी समय बेल के पेड़ से एक बेल गिर पड़ा। उसके गिरने से खड़-खड़ की आवाज हुई। खरगोश तो आकाश के गिर पड़ने की चिन्ता में डूबा हुआ था। उसे बेल तो गिरता नहीं दिखाई दिया पर खड़-

खड़ की आवाज सुनकर वह चौंक पड़ा। उसे लगा कि यह तो वही हुआ जिसका मुझे डर था। आकाश गिरने लगा है। मुझे भागकर अपनी जान बचानी चाहिए। बस फिर क्या था ! यह सोचते ही वह सिर पर पांव रखकर भाग खड़ा हुआ।

रास्ते में उसे एक हिरण मिला। हिरण बोला—"खरगोश गुसाईं, तुम तो ऐसे भागे जा रहे हो जैसे जंगल में आग लग गई हो।"

खरगोश ने भागते-भागते कहा, "अरे भई, आकाश गिर रहा है। भला चाहते हो तो भागो। देर मत करो।"

हिरण भी खरगोश के पीछे भाग लिया। आगे एक बारहसिंगा मिला। जब उसने आकाश गिरने की बात सुनी तो वह भी साथ हो लिया।

तीनों भागते जाते थे और 'भागो-भागो' का शोर मचाते जाते थे। अब तो जो भी उन्हें भागते देखता, उनके साथ हो लेता और भागने लगता।

इस तरह बनबिलाव, सूअर, रीछ और भालू; बन्दर, लकड़बग्घा, चीता, बाघ और हाथी, गैंडा, जिराफ और सिंह सभी शोर मचाते भागने लगे।

सबके मिलकर 'भागो-भागो' का शोर मचाने से

सारे जंगल में भगदड़ मच गई। साही भी अपने बिल से निकलकर भागने लगी। लंगूरों का पूरा झुंड साथ हो लिया।

हाथी चिंघाड़ने लगे। शेर दहाड़ने लगे। भेड़िये गुर्राने लगे। बन्दर 'खों-खों' करने लगे। सूअर घुर-घुर करने लगे। दौड़ते-दौड़ते सभी जानवरों की जीभें बाहर निकल आईं। वे पसीने से तर-बतर हो गए। पर वे फिर भी बिना रुके भागते गए। अन्त में उन्हें एक सियार मिला।

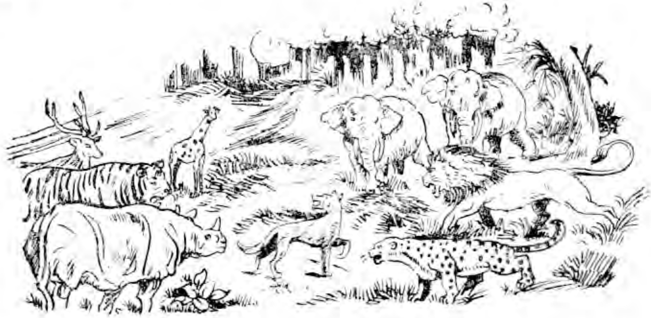

आप जानते ही हैं कि जानवरों में सियार सबसे चालाक होता है। उसने सब को पागलों की तरह भागते देखा तो आगे जाकर खड़ा हो गया। उसने शेर से पूछा, "वनराज ! आप इस तरह भाग क्यों रहे हैं ?"

शेर ने कहा, "हाथी कहता है कि आकाश गिर रहा है।"

हाथी ने चीते का नाम ले दिया। चीते ने बाघ का, बाघ ने लकड़बग्घे का। इस तरह अन्त में खरगोश का नाम आया।

सियार ने खरगोश से पूछा, "क्यों, जी, क्या मामला है ! तुमने भी किसी और से सुना है या स्वयं देखा है ? मालूम होता है यह आकाश गिरने की खबर सारे जंगल में तुमने ही फैलायी है।"

खरगोश बोला, "सियार महाशय ! आप ठीक कह रहे हैं। मैंने ही सबको इस खतरे से सावधान किया है। मैं न बताता तो सब मारे जाते। एक भी नहीं बचता।"

सियार ने खरगोश से पूछा, "जरा साफ करके बताओ कि क्या हुआ था ? तुमने क्या देखा था ?"

खरगोश बोला, "देखो जी, मैं झूठ तो बोलूंगा नहीं। मैंने देखा-वेखा तो कुछ नहीं, हां, सुना जरूर था। लीजिए, सुनिए; मैं आप को सारी बात बताता हूं।" खरगोश ने कहना आरम्भ किया :

"मैं लेटा-लेटा आकाश की ओर देख रहा था कि मेरे मन में विचार आया कि अगर आकाश गिर पड़े

तो क्या हो ! मैं तो इस विचार से घबरा गया और जिस बात का डर था, वही हुई। बड़े ज़ोर से एक धमाका हुआ। मेरी भी सारी उमर इस जंगल में बीती है पर ऐसा धमाका तो मैंने कभी नहीं सुना था। इस धमाके को सुनकर मुझे पूरा विश्वास हो गया कि आकाश गिरने लगा है। फिर क्या था ! मैं भाग खड़ा हुआ और रास्ते में जो भी मिला उसे बताता गया। इस तरह मैंने आज जंगल के सारे जानवरों की जान बचाई है। मैं न बताता तो किसीको कुछ पता न लगता और सब दबकर मर जाते।"

सियार ने कहा, "अच्छा, जरा हमारे साथ चल कर हमें वह जगह तो दिखाओ, जहां यह घटना घटी थी।"

खरगोश बोला, "अजी मुझे तो वहां जाने में बड़ा डर लग रहा है। मैं नहीं जाता उस खतरनाक जगह।"

सियार ने कहा, "तुम अकेले थोड़े ही जाओगे। हम सब भी साथ चलेंगे।"

खरगोश बोला, "मेरी तो भागते-भागते टांगें दुखने लगी हैं। मुझसे तो चला नहीं जाता। सबसे पहले तो मैं ही भागा था।"

पास खड़े हाथी ने उसे अपनी सूंड में लपेटकर सिर पर बिठा लिया।

खरगोश को क्या पता था कि हाथी उसे सिर पर बिठाएगा। उसकी तो डर के मारे चीख ही निकल गई।

सब जानवर उस जगह को देखने लौट पड़े, जहां से आकाश गिरना शुरू हुआ था। सबसे आगे हाथी चला। खरगोश उसके माथे पर बैठा रास्ता बताता जाता था।

जब वे बेल के पेड़ के पास पहुंचे तो खरगोश ने हाथी को रोकते हुए कहा, "हाथी दादा, रुको। आगे मत जाना। खतरा है। यही वह जगह है, जहां वह धमाका हुआ था।"

इतने में हाथी की सूंड से बेल की एक डाल हिल गई। हिलने पर बेल टूट कर नीचे गिर पड़े और सूखे पत्तों पर खड़-खड़ आवाज हुई।

खरगोश ने हाथी के माथे पर से छलाँग लगा दी और भागने लगा। भागते-भागते बोला, "बस बिल्कुल ऐसा ही धमाका हुआ था। मैंने पहले ही कहा था कि यह जगह खतरनाक है। भागो! भागो!! भागो!!!"

अब तो सबको अपनी मूर्खता पर हंसी आने लगी। खरगोश की बेसिर पैर की बात पर उन्होंने आंखें मूंदकर, बिना सोचे-समझे जो विश्वास कर लिया था, उसीसे यह सब गड़बड़झाला हुआ था।

अभ्यास

1. एक दिन खरगोश ने क्या सोचा ?
2. बेल के गिरने से खरगोश ने क्या सोचा ?
3. खरगोश ने हिरन से क्या कहा ?
4. जंगल के सभी जानवर क्यों भागने लगे ?
5. सियार ने क्या किया ?
6. खरगोश हाथी के सिर से क्यों कूद पड़ा ?
7. सब जानवरों ने क्या मूर्खता की थी ?

जैसे को तैसा

हिमालय की तराई में एक बड़ा घना जंगल था। इस जंगल का नाम था घनघोर। घनघोर जंगल में जंगली पशुओं की भरमार थी। शेर, हाथी, चीते, बाघ भालू, रीछ, बारहसिंगे, हिरण, बंदर, लंगूर, लोमड़ी, सूअर, खरगोश और साही जैसे छोटे-बड़े जानवर उसमें रहते थे।

इस जंगल का राजा एक शेर था। शेर से सभी जानवर डरते थे। एक बार शेर ने एक हिरन को पकड़ने के लिए छलांग लगाई। हिरन चौकड़ी भरता भाग गया और शेर एक कांटों वाली झाड़ी पर जा गिरा। कांटों से शेर के शरीर पर कई खरोंचें लगीं। एक लंबा और तीखा कांटा उसके पैर में भी चुभ गया। अब शेर लंगड़ा हो गया। उसका पंजा सूजकर पक गया। वह अपनी गुफा में बैठा रहता। उसके मंत्री चीता और बाघ उसके लिए कोई जानवर पकड़ लाते।

जब जंगल के जानवरों को पता लगा कि उनके राजा के पंजे में काँटा चुभ गया है तो सभी हाल-चाल

पूछने आने लगे ।

चीता और बाघ गुफा के बाहर बैठे रहते । वे बारी-बारी जानवरों को शेर के दर्शन करने और हाल पूछने भीतर भेजते ।

इस तरह जंगल के सभी जानवर हाल पूछने आए पर लोमड़ी नहीं आई । चीता और लोमड़ी में पुरानी अनबन थी । इसलिए चीते ने शेर से लोमड़ी की शिकायत कर दी । बोला, "महाराज ! जंगल के सभी जीव आपको देखने आए । पर लोमड़ी नहीं आई । वह अपने आपको पता नहीं क्या समझती है ? बड़ी अकड़ है उसमें । मेरे विचार में उसे इस बात की सज़ा मिलनी चाहिए । आगे महाराज जैसा ठीक समझें, वैसा करें ।"

शेर को भी चीते की बात पसन्द आई । उसने कहा, "मंत्री जी, आप ठीक कहते हैं । अभी बाघ को भेजकर लोमड़ी को बुलाइए ।"

चीते ने बाघ को भेजकर लोमड़ी को बुला भेजा । जब बाघ ने लोमड़ी को बताया कि तुम्हें शेर महाराज ने बुलाया है तो लोमड़ी समझ गई कि जरूर कुछ गड़बड़ है । यह तो सभी जानते हैं कि आदमियों में नाई, पक्षियों में कौआ और चौपायों में लोमड़ी बड़ी

चालाक होती है। लोमड़ी ने बाघ का खूब आदर-सत्कार किया। फिर पूछा, "बाघराज जी, आपको तो जरूर पता होगा कि शेर महाराज ने मुझ दासी को क्यों बुलाया है ?"

बाघ बोला, "भला मुझे पता क्यों नहीं होगा ! बात यह है कि चीते ने तुम्हारी शिकायत की है। जंगल के सभी जानवर शेर महाराज का हाल पूछने पहुंचे पर तू नहीं पहुंची। इसी बात की पूछताछ के लिए तुम्हें बुलाया है पर यह मत कहना कि बाघ ने यह बात मुझे बताई है।"

लोमड़ी बोली, "भला मैं आपका नाम क्यों बताने लगी। आप तो मेरे रक्षक हैं। आप बिल्कुल चिन्ता न करें।"

लोमड़ी बाघ के पीछे-पीछे चल पड़ी। गुफा के पास पहुंचकर बाघ ने चीते को बताया कि लोमड़ी आ गई है। चीता लोमड़ी को शेर के पास छोड़कर बाहर निकल आया। लोमड़ी ने झुककर शेर को प्रणाम किया और खड़ी रही।

शेर ने लोमड़ी से पूछा, "अरी लोमड़ी ! क्या तुझे मेरे पंजे में काँटा चुभने की बात मालूम नहीं थी ?"

"मालूम थी महाराज !" लोमड़ी ने बड़ी नम्रता से उत्तर दिया।

"फिर तू मेरा हाल पूछने क्यों नहीं आई ?" शेर ने कहा।

"महाराज ! जिस दिन मुझे पता लगा कि आपके पंजे में काँटा चुभा है, उसी दिन से मैं बेचैन हूं। मैं कई दिनों से मारी-मारी घूम रही हूं कि इसकी कोई दवाई लेकर चलूं। मैं कई डाक्टरों, हकीमों और वैद्यों के पास इसकी दवाई पूछने गई।" लोमड़ी बोली।

शेर ने पूछा, "फिर, किसीने कोई दवाई नहीं बताई ?"

लोमड़ी बोली, "महाराज ! सभी ने यही कहा कि कांटे को कांटे के साथ निकाल दो। पर मैं जानती थी कि इससे महाराज को बड़ी दर्द होगी। फिर मैं खोजती, पता लगाती एक बड़े बूढ़े हकीम के पास पहुंची। मैंने उनके पांव पकड़ लिए और गिड़गिड़ाई कि जब तक हमारे राजा के पंजे में चुभे कांटे को निकालने की दवाई नहीं बताएंगे, मैं आपके पैर नहीं छोड़ूंगी। तब वह गुणी हकीम बोले, "अच्छा-अच्छा, मेरे पैर छोड़, मैं अभी दवाई बताता हूँ।"

शेर यह तो भूल ही गया कि लोमड़ी को किस

लिए बुलाया गया था। वह बोला, "तो फिर क्या दवाई बताई हकीम जी ने ?"

लोमड़ी बोली, "महाराज ! हकीम जी ने कहा है कि यह दवाई जादू का असर करती है। एक बार लगाने से ही कांटा बाहर निकल आएगा और सूजन तथा दर्द दूर हो जाएगी। पर महाराज ! वह दवाई लाना मेरे वश के बाहर है। आप चाहें तो घड़ी भर में मिल सकती है। पर उस दवाई के लिए एक मित्र की जान जाएगी।"

शेर बोला, "कोई बात नहीं, तुम दवाई का नाम बताओ। जैसे यह बाघ तुम्हें बुला लाया, वैसे ही दवाई भी ले आएगा।"

शेर ने चीते और बाघ को भीतर बुला लिया। उन्होंने भी लोमड़ी की बात सुनी। चीता चापलूसी करता हुआ बोला, "महाराज ! हम तो आपके सेवक हैं। आपका दर्द दूर करने के लिए हम अपनी जान भी दे सकते हैं। लोमड़ी जी आप, झट से दवाई का नाम बताइये। इसमें झिझकने की क्या जरूरत है।"

लोमड़ी बोली, "महाराज ! हकीम जी ने कहा है कि चीते के कलेजे का लेप लगाने से कांटा अपने आप निकल जाएगा।"

यह सुनते ही चीते का चेहरा उतर गया। शेर ने बाघ को आँख का इशारा किया कि चीते को फाड़ डालो।

बाघ ने चीते को फाड़ डाला और उसका कलेजा निकाल लाया। लोमड़ी ने कलेजे को पीसकर उस का लेप शेर के पंजे में लगा दिया।

फिर लोमड़ी ने कहा, "लेप लगाने से महाराज का दर्द दूर हो जाएगा और उन्हें नींद आ जाएगी। आप सब लोग गुफा से बाहर निकल जाइए और शोर मत मचाइए।"

लोमड़ी और दूसरे जानवर गुफा से बाहर

निकल गए। लोमड़ी चुपचाप खिसककर जंगल में गायब हो गई।

अभ्यास

1. शेर लंगड़ा कैसे हुआ ?
2. चीते ने शेर से लोमड़ी की क्या शिकायत की ?
3. लोमड़ी ने शेर से क्या कहा ?
4. कांटा निकालने की दवाई लोमड़ी ने क्या बताई ?
5. लोमड़ी ने चुगलखोर चीते को कैसे मरवाया ?
6. लोमड़ी गुफा से खिसक क्यों गई ?